

20705017

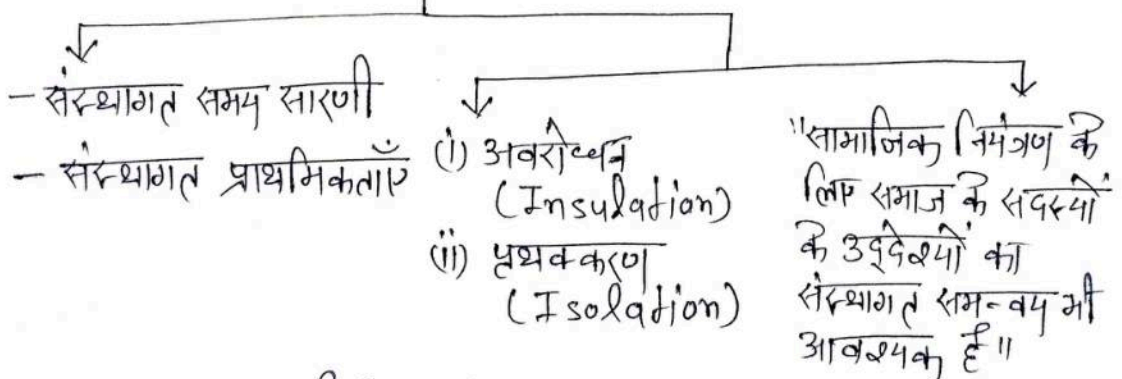
प्रश्न सं०-50

पारसेल द्वारा वर्णित "सामाजिक नियंत्रण" के साधनों पर चर्चा करें?

उत्तर— पारसेल का सामाजिक नियंत्रण का सिद्धांत उन सामाजिक विधियों या व्यक्तियों की विवेचना करता है जो कि उन पशुश्रेष्ठ या समाज-विरोधी व्यवहारों पर रोक लगाती हैं जो कि सामाजिक व्यवस्था के संगठन तथा अखण्डता को नष्ट करते हैं।

पारसेल के अनुसार, "सामाजिक नियंत्रण के आधारभूत साधन संस्थागत रूप में संगठित एक समाज-व्यवस्था की स्वभाविक अन्तःक्रिया में पाए जाते हैं।"

सामाजिक नियंत्रण के साधन (The Mechanism of Social Control)



पारसेल का कथन है कि प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक नियमों या संस्थागत-व्यवहार प्रतिमानों के अनुसार व्यवहार या कार्य करने पर पुरस्कृत करने तथा उनके विपरीत कार्य करने या उल्लंघन करने पर दंडित करने की रीति है। ये भी सामाजिक नियंत्रण में अत्यधिक सहायक सिद्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त समाज-विरोधी प्रवृत्तियों के प्रति प्रतिक्रिया करने की अनियोजित तथा अचेत अनेक साधनों की एक जटिल व्यवस्था भी प्रत्येक समाज में हुआ करती है।

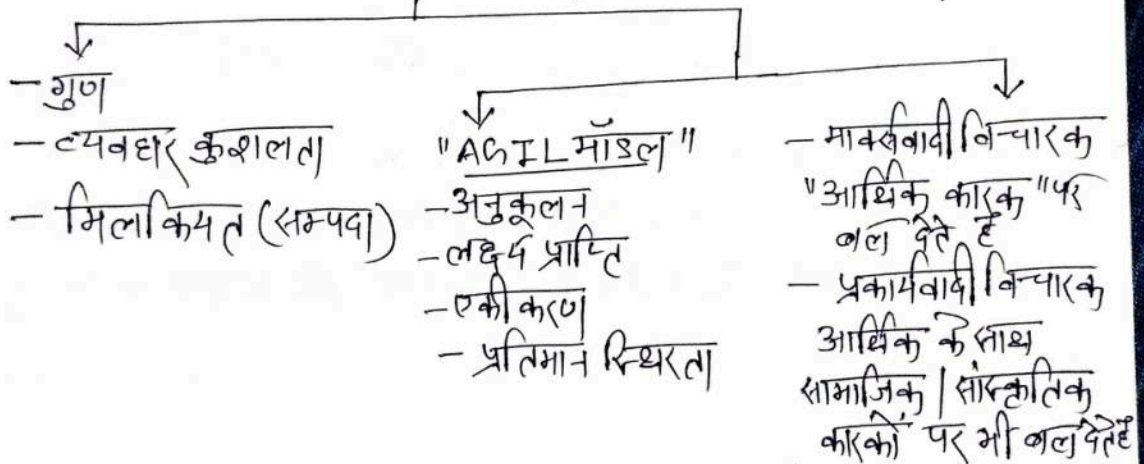
20705017

प्रश्न सं०-49

टालकांट पारसेस के "सामाजिक स्तरीकरण" सिद्धांत की व्याख्या करें ?

उत्तर- टालकांट पारसेस का भी मत है कि सामाजिक स्तरीकरण का कुछ निश्चित प्रकायात्मक महत्व होता है जिसकी विवेचना केवल वैयक्तिक कर्ता के दृष्टिकोण से नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज व्यवस्था के संदर्भ में भी की जा सकती है।

सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification)



सामाजिक स्तरीकरण सार्वभौमिक व्यवस्था है, व्यक्ति को प्रगति के अवर मिलने चाहिए। पारसेस कहता है, सरल समाज में व्यक्ति आध्यात्म नहीं था, सबकुछ सामूहिकता पर आधारित था। जटिल समाज की संरचनाओं और संगठन, प्रकायात्मक रूप से प्रदत्त परिस्थिति के स्थान पर अर्जित परिस्थिति को महत्व मिला है। अर्जित परिस्थिति को प्राप्त करने में विशेष योग्यता, प्रशिक्षण, शिक्षा का महत्व है। पारसेस ने प्रतिमानों की भूमिका को केन्द्रीय महत्व दिया है। मूल्य प्रतिमानों के बिना समाज व्यवस्था की स्थिरता व निरंतरता सम्भव नहीं है।

10705017

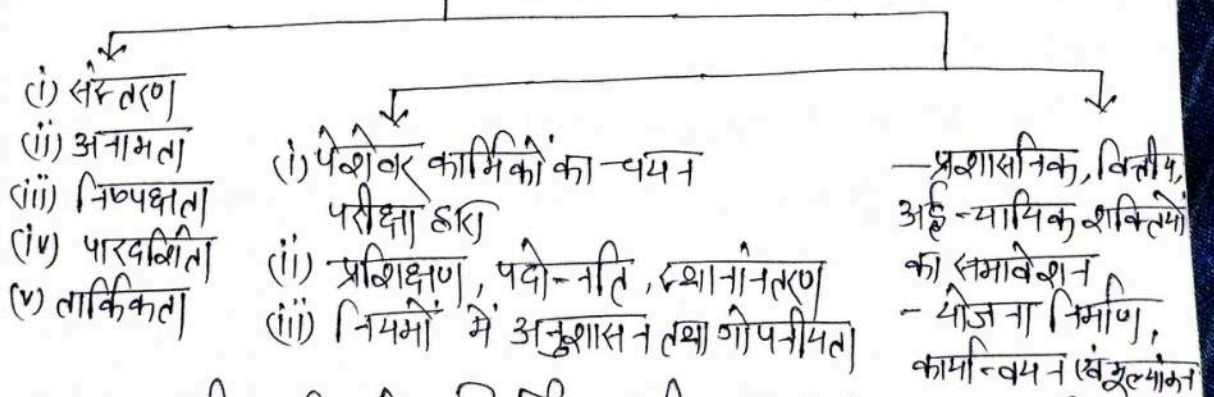
प्रश्न सं०-48

मैक्स वेबर की "नोकरशाही" (Bureaucracy) से संबंधी विचारों को स्पष्ट करें?

उत्तर- 19वीं शताब्दी में कई विचारकों ने आधुनिक नोकरशाही के विषय में अपने विचारों को प्रस्तुत किया, मैक्स वेबर भी उनमें से एक हैं। साथ ही मैक्स वेबर ही प्रथम विचारक थे जिन्होंने कि अन्य विद्वानों की भांति केवल नोकरशाही की उत्पत्ति तथा कार्य का ही विश्लेषण नहीं, अपितु उसका क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तुत किया।

वास्तव में "नोकरशाही" (Bureaucracy) एक प्रकार का संस्थात्मक संगठन होता है। जिसका उद्देश्य बड़े पैमाने पर प्रशासनिक कार्यों के संचालन करने में अनेक व्यक्तियों के कार्यों को तर्कसंगत रूप में समन्वित करना होता है।

नोकरशाही (Bureaucracy)



समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से नोकरशाही एक विशेष प्रकार की सामाजिक संरचना है, जिसका प्रयोग समाज में कुशल वित्तीय, योजनागत तथा मविध्योन्मुखी कार्यान्वित योजनाओं का निर्माण करना है। ताकि समाज में सामाजिक, आर्थिक असमानता को समाप्त किया जा सके।

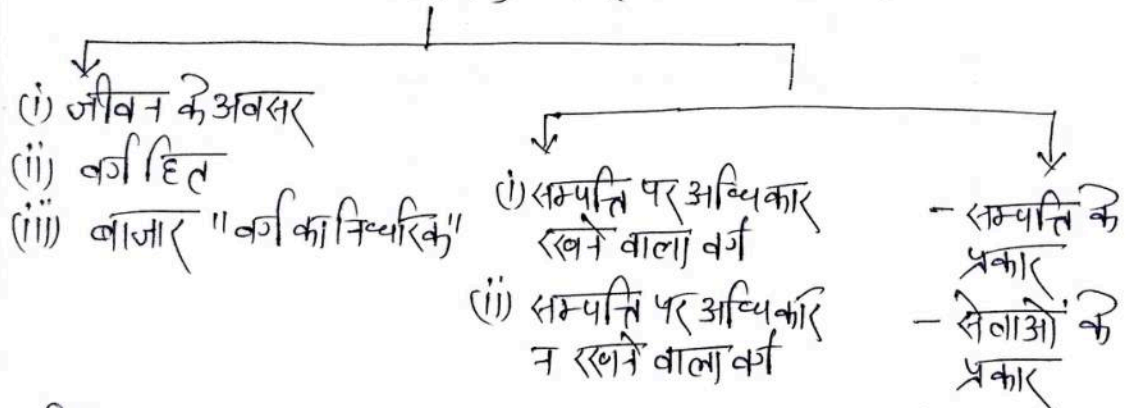
A0705017

प्रश्न सं०-५७

मैक्स वेबर की "सामाजिक वर्ग" की अवधारणा स्पष्ट करें?

उत्तर- मैक्स वेबर की सामाजिक वर्ग (Social Class) की अवधारणा मुख्यतः आर्थिक आधारे पर आधारित है, फिर भी आप आर्थिक तथा सामाजिक कारकों में अव्यक्त अन्तःक्रिया को स्वीकार करते हैं और इसी कारण आपने सामाजिक वर्ग के अध्ययन में इन दोनों कारकों को उचित स्थान या महत्व प्रदान किया है।

सामाजिक वर्ग (Social Class)



मैक्स वेबर के अनुसार, "हम एक समूह को तब वर्ग कह सकते हैं जबकि उस समूह के लोगों की जीवन के कुछ विशिष्ट अवसर समान रूप से प्राप्त हो, यहाँ तक कि यह समूह वस्तुओं पर अधिकार या आमदनी की सुविधाओं से सम्बन्धित आर्थिक हितों द्वारा पूर्णतया निर्धारित तथा वस्तुओं या श्रमिक बाजारों की अवस्थाओं के अनुरूप हो।" पुरुषोत्तम युग में "पुरुष", कृषि युग में "भूमि" तथा वर्तमान में "निजी सम्पत्ति" आर्थिक कारक हैं, जो वर्ग का निर्माण करते हैं।

20705017

प्रश्न सं 0-46

कार्ल मार्क्स का "अतिरिक्त मूल्य" सिद्धांत की व्याख्या करें ?

उत्तर- मार्क्स के दर्शन सर्वप्रमुख उद्देश्य सर्वहारा वर्ग का स्पष्ट हितकामना तथा पूंजीवाद व्यवस्था के विनाश की अवश्यभावता को प्रदर्शित और प्रमाणित करना है। उन्होंने पूंजीवाद के विकास और सामाजिक परिणामों की जो व्याख्या की है उसकी मुख्य बात उनका "अतिरिक्त मूल्य" (Surplus Value) का सिद्धांत है, जिसे उन्होंने "मूल्य के श्रम सिद्धांत" के आधार पर स्थिर किया है। मूल्य का श्रम सिद्धांत का अर्थ यह है कि "अन्त में किसी वस्तु का विनिमय मूल्य उसके उत्पादन में लगाए गए श्रम की मात्रा पर निर्भर है।"

अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत "Theory of Surplus Value" वास्तव में यह एक अंग्रेजी सिद्धांत है, जिसको 19वीं शताब्दी में प्रतिपादित करने का श्रेय सर विलियम पेटी को है।

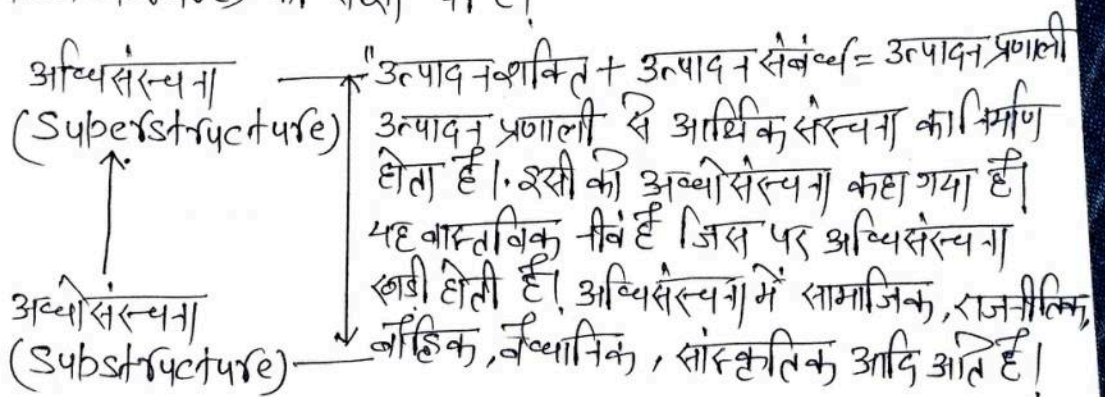
श्रमिक अपने श्रम के द्वारा वास्तव में जितना मूल्य पैदा करता है पूंजीपति उसे उसके बदले में उतना मूल्य (वेतन) न देकर उससे कहीं कम मूल्य वेतन के रूप में देता है और इस प्रकार श्रमिक द्वारा पैदा किए हुए मूल्य का अधिकांश भाग पूंजीपतियों के पास ही रह जाता है। यही अतिरिक्त मूल्य जिसे पूंजीपति चोखे और अन्याय से अपने पास रख लेते हैं "अतिरिक्त मूल्य" ही वह अस्त्र (हथियार) है जिस के द्वारा पूंजीपति वर्ग श्रमिक वर्ग का निरंतर शोषण करता है और यह शोषण ही वर्ग संघर्ष का कारण बनता है।

A070501T

प्रश्न सं०-45

कार्ल मार्क्स के "अव्यसंस्चना" और "अव्योसंस्चना" सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर- मार्क्स के लेखन में सामाजिक संस्चना के सम्बन्ध में जो विचार व्यक्त किया गया है, उसके अध्ययन से यह पता चलता है कि मार्क्स ने सम्पूर्ण सामाजिक संस्चना को दो मोटे भागों में विभाजित करके उनके बारे में विश्लेषण किया है। समाज के सम्पूर्ण ढाँचे के ऊपरी भाग को उन्होंने "अव्यसंस्चना" (Superstructure) कहा है, जबकि बुनियादी भाग या निचले भाग को "अव्योसंस्चना" (Substructure) की सेवा दी है।



उत्पादन प्रणाली में किसी समाज विश्लेष की उत्पादन शक्ति के तीन तत्व या अंग होते हैं - मनुष्य, उत्पादन के उपकरण तथा उत्पादन अनुभव व श्रम-कौशल। उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन के साथ-2 विभिन्न सामाजिक वर्गों की प्रकृति तथा पद, लोगों के व्यापारिक विश्वास, नैतिक, आदर्श, कला, साहित्य, सामाजिक व राजनीतिक संस्थाएँ आदि भी बदल जाते हैं। सामाजिक परिवर्तन का इतिहास वास्तव में समाज की अव्योसंस्चना में परिवर्तन का इतिहास है।

20705017

प्रश्न सं०-444

दुर्लभ द्वारा प्रस्तुत विसंगति (Anomie) की अवधारणा स्पष्ट करें?

उत्तर- आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धांत के क्षेत्र में विसंगति (Anomie) की अवधारणा बहुत महत्व की है और उसे आधुनिक अर्थ के प्रयोग करने का श्रेय दुर्लभ को ही है। दुर्लभ ने सर्वप्रथम "विसंगति" की अवधारणा को अपनी महत्वपूर्ण कृति "The Division of Labour in Society" में विवक्षित कर उस स्थान पर विकसित किया है जहाँ कि उन्होंने प्रथम विभाजन के "सामान्य तथा व्याव्यक्तिक" परिणामों का उल्लेख किया है।

"विसंगति आदर्शविहीनता की एक अवस्था है, स्वभाविकता का अभाव है, नियमों का निलम्बन है, एक ऐसी स्थिति में जिसे कि हम अक्सर नियमविहीनता कहते हैं।"

जब भी कोई अन्यायक परिवर्तन होता है और उस अवस्था में समाज के नियंत्रात्मक नियमों की आदर्शात्मक संरचना ढीली पड़ जाती है और उस अवस्था में व्यक्ति को यह नहीं सुझता कि क्या गलत है अथवा क्या सही है, उसकी दृष्टि अदृश्य रूप में बढ़ जाती है और उनकी संतुष्टि के लिए वह विसंगति को अपनाता है। समाज है तो विसंगति भी है, यह समझना होगा कि विसंगति को आदर्श नियम एवं नैतिक आचरण से ही नियंत्रित किया जा सकता है।

A070501T

प्रश्न सं०-42

हरबर्ट स्पेंसर द्वारा वर्णित "सैनिक और औद्योगिक समाज" की व्याख्या करें?

उत्तर- स्पेंसर ने सामाजिक और राजनीतिक संगठन के ऐतिहासिक विकासवाद का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। स्पेंसर ने सैनिक समाज (Militant Societies) एवं औद्योगिक समाज (Industrial Societies) का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है।

स्पेंसर के कथनानुसार, राज्य अपना समस्त ध्यान सैनिक संगठन, विजय और प्रादेशिक विस्तार के ऊपर केन्द्रित करता है। किन्तु जैसे-2 समय बीतता जाता है उसका ध्यान अधिकाधिक उद्योग के विकास की ओर जाता है। उस अवस्था में राजनीतिक विकासवाद की प्रक्रिया सैनिक राज्य से औद्योगिक राज्य में रूपांतरित हो जाती है। सैनिक समाज की अपेक्षा औद्योगिक समाज अधिक भ्रष्ट है, क्योंकि इसके अन्तर्गत मनुष्य को नैतिक विकास का अवसर प्राप्त होता है। आदर्श स्थिति तो यह होगी जब उद्योगवाद के साधनों को मानव-चरित्र के नैतिक आचार को पूर्ण विकसित करने की दिशा में लागू किया जा सकेगा और मानव-चरित्र में सामाजिकता के गुण विकसित हो जायेंगे तथा उसके ऊपर बाहरी नियंत्रण की आवश्यकता नहीं रहेगी। इसे ही स्पेंसर औद्योगिक समाज कहता है।

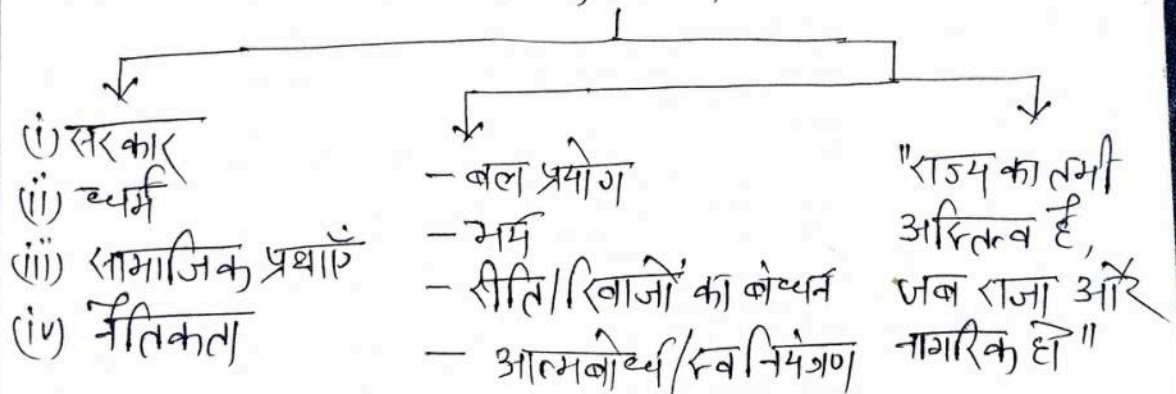
A0705017

प्रश्न सं०-५१

हरबर्ट स्पेंसर के सामाजिक नियंत्रण के सिद्धांत को स्पष्ट करें?

उत्तर- स्पेंसर के अनुसार, समाज का अस्तित्व बना रहे यह आवश्यक है और इसके लिए यह जरूरी है कि व्यक्तियों के व्यवहारों पर कुछ-न-कुछ नियंत्रण रखा जाए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाज सामाजिक नियंत्रण के कुछ साधनों को विकसित करता है।

सामाजिक नियंत्रण के साधन



समाज अपने उद्भविकाल में सरल से जटिल होता गया है। सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाओं के विकास ने राजनैतिक प्रणाली को आवश्यक बना दिया। राज्य के अस्तित्व ने मनुष्य पर बाह्य नियंत्रण आरोपित किये हैं, अतः नियंत्रण धर्म एवं सामाजिक प्रथाओं का रहा है। स्पेंसर कहते हैं कि जब मनुष्य में पूर्ण रूप से नैतिक दृष्टिकोण विकसित हो जायेगा तो मनुष्य को राजकीय नियंत्रणों की आवश्यकता नहीं रहेगी। सामाजिक नियंत्रण का स्थान आत्मअनुशासन ले लेगा।

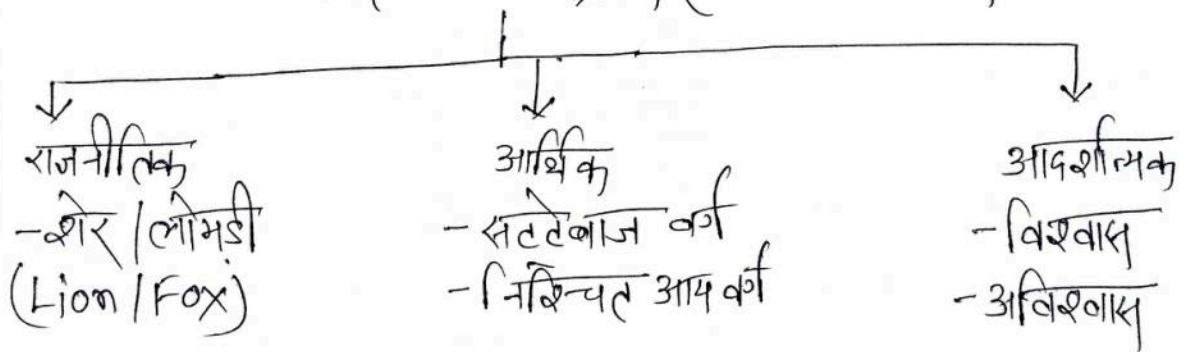
A0705017

प्रश्न सं० - 40

विलफ्रेड पैरेटो का "अभिजात वर्ग का परिभ्रमण" सिद्धांत क्या है, व्याख्या करें?

उत्तर— प्रत्येक समाज में किसी न किसी आध्वार पर ऊँच-नीच का एक संस्तरण अवश्य ही होता है। आमतौर पर प्रत्येक समाज के दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया जा सकता है जो कि सामान्य बोल-चाल में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग कहलाते हैं। उच्च वर्ग से निम्न वर्ग में परिभ्रमण की प्रक्रिया प्रत्येक समाज में अवश्य है क्योंकि कोई भी वर्ग पूर्णतया 'बन्द वर्ग' हो सके, ऐसा संभव नहीं है।

अभिजात वर्ग का परिभ्रमण (Circulation of Elites)



(i) कोई वर्ग पूर्णतया बंद नहीं हो सकता!

(ii) अभिजात वर्ग शक्ति के अधिकारी होते हैं, और यह शक्ति उन्हें भ्रष्ट कर देती है तथा उनका पतन होता है।

(iii) निम्न वर्ग में भी कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं जो कि ऊपर की ओर चढ़ते हैं।

पैरेटो ने स्पष्ट ही कहा है, "इतिहास कुलीन-तन्त्रों का कश्मिरान है।" अभिजात वर्ग का परिभ्रमण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया सिद्धांत की अभिव्यक्ति है।

A070501T

प्रश्न सं०-39

अगस्ट कॉमंट का "सामाजिक गतिकी एवं सामाजिक स्थितिकी" सिद्धान्त क्या है, व्याख्या करें ?

उत्तर- अगस्ट कॉमंट ने समाजशास्त्र को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया है -

(i) सामाजिक स्थिति विज्ञान (Social Static Science)

(ii) सामाजिक गतिकी विज्ञान (Social Dynamics Science)

सामाजिक स्थिति विज्ञान, समाज की संरचना से सम्बन्धित है जबकि सामाजिक गति विज्ञान, समाज के विकास से सम्बन्धित है।

कॉमंट के अनुसार स्थिति विज्ञान का सम्बन्ध "सामाजिक साव्यव के ऐकमत्य" (Consensus of the Social Organism) से है जिसका अर्थ अन्योन्याश्रित भागों में सामंजस्य का होना है। सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न भागों तथा समग्र में सर्वत्र ही एक स्वतः प्रवृत्त सामंजस्य होना चाहिए और इसके तत्वों को अनिवार्य रूप में समरसता पूर्वक सम्बन्धित होना चाहिये। सामाजिक गति विज्ञान का उद्देश्य उन नियमों की खोज से है जो कि इस सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न अंगों निरन्तरता एवं विकास को निर्देशित करते रहे।

समाज में बौहिक अराजकता तथा हिंसात्मक व्यवहार, मानव विकास को बाधित करता है। सामाजिक गतिविज्ञान मानव के विकास या प्रगति का विन्यास है। सामाजिक स्थिति विज्ञान संतुलन और सामंजस्य को प्रेरित करता है।

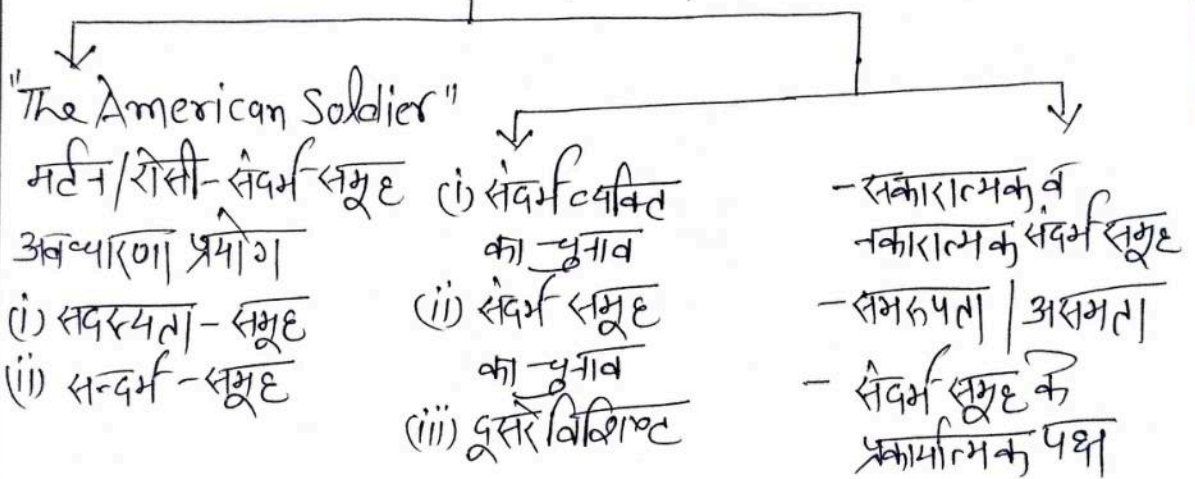
2070501T

प्रश्न सं० - 38

आर०के०गर्टन का "संदर्भ समूह" सिद्धांत क्या है, व्याख्या करें ?

उत्तर- संदर्भ समूह (Reference Group) का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1942 में हर्बर्ट मेन ने किया था। संदर्भ समूह की अवधारणा हमारे लिए विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि इसका सम्बंध स्वस्थ मनोविज्ञान से होता है।

संदर्भ समूह (Reference Group)



मर्न के अनुसार व्यक्ति जिस समूह का वास्तविक सदस्य होता है, वह उस व्यक्ति के लिए "स्वस्थता समूह" होता है। जिस समूह की सदस्यता पाने के लिए प्रयासरत है, वो संदर्भ समूह है। संदर्भ समूह व्यक्ति के मनोमस्तिष्क में रहता है। संदर्भ समूह व्यक्ति को उस समूह के साथ समरूपता स्थापित करने की प्रेरणा देता रहता है जिसके कारण व्यक्ति अपने संदर्भ समूह के शूलों, आदर्शों तथा आचरणों को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रयत्नशील होता है। व्यक्ति के प्रत्याशी समाजीकरण की दिशा में संदर्भ समूह का उल्लेखनीय प्रकार्य है।

A070501T

प्रश्न सं०-37

आर०के०महिन का "व्यक्त एवं अव्यक्त प्रकार्य" क्या है, उल्लेख करें?
उत्तर- महिन के अनुसार, "प्रकार्य वे वस्तुपरक परिणाम हैं जो किसी व्यवस्था (प्रणाली) के अनुकूलन एवं समायोजन में वृद्धि करते हैं"।
महिन प्रकार्य के दो भेद बताये हैं, जो निम्न लिखित हैं—

(i) प्रकट / व्यक्त प्रकार्य—(Manifest Function)

"किसी व्यटना, तत्व या इकाई के वस्तुपरक परिणाम प्रकट या व्यक्त प्रकार्य हैं जो किसी व्यवस्था के कार्यकर्ताओं या सहयोगियों द्वारा अपेक्षित, मान्य एवं वांछित हैं।"

(ii) अप्रकट / अव्यक्त प्रकार्य—(Latent Function)

"किसी व्यटना, क्रिया, तत्व अथवा वस्तु के उन परिणामों को अव्यक्त या अप्रकट प्रकार्य कहा जाता है जो अप्रत्याशित, अनपेक्षित, अकल्पित तथा अमान्य होते हैं।"

महिन ने अव्यक्त / अप्रकट प्रकार्य और अप्रत्याशित परिणाम में भेद किया है। अव्यक्त प्रकार्य अप्रत्याशित परिणाम का एक ऐसा प्रकार है जो विचाराधीन व्यवस्था के लिए प्रकायात्मक होता है। किन्तु अप्रत्याशित परिणाम के दो अन्य रूप भी हैं। प्रथम, वे परिणाम जो विचाराधीन व्यवस्था के लिए दुष्प्रकायात्मक हैं, इन्हें अव्यक्त दुष्प्रकार्य कहते हैं। द्वितीय, वे परिणाम जो व्यवस्था के लिए निरर्थक हैं, अर्थात् न तो वे प्रकायात्मक रूप में और न ही दुष्प्रकायात्मक रूप में प्रभावित करते हैं। इन्हें अप्रकायात्मक परिणाम कहते हैं।

40705017

प्रश्न सं०-36

आर०के०मर्चन का "मध्य सीमा सिद्धांत" क्या है, वर्णन करें?

उत्तर- समाजशास्त्र, सामाजिक व्यवस्थाओं के विश्लेषण में दो प्रकार के सिद्धांतों का प्रयोग करता है, प्रथम बहुत या विस्तृत अध्ययन एवं लघु या सूक्ष्म अध्ययन, प्रतिपादित सिद्धांत समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के दो होर हैं, मध्य-अभि-सीमा सिद्धांत (Middle-Range) इन दोनों के बीच की स्थिति है, मध्य-अभि-सीमा सिद्धांत न तो सामाजिक व्यवस्था के सब कुछ को समेटने वाले अथवा सम्पूर्ण व्यवस्था से सम्बन्धित होते हैं और न ही सामान्य ज़िह पर आधारित सिद्धांत।

मर्चन के अनुसार, मध्य-अभि-सीमा के सिद्धांत वे सिद्धांत हैं जो कि एक ओर दिन-प्रतिदिन के शोध में प्रचुर मात्रा में प्रकट होने वाले लघु किन्तु ज़रूरी कार्य-निर्वाही प्राक्कल्पनाओं एवं दूसरी ओर सामाजिक व्यवहार, सामाजिक संगठन व सामाजिक परिवर्तन में समस्त निरीक्षित समानताओं की व्याख्या करने वाले एक समन्वित सिद्धांत को विकसित करने हेतु सब कुछ को सम्मिलित करते हुए किए गए व्यवस्थित प्रयत्नों के बीच में स्थित होते हैं।

आज के प्रयोगवर्धी समाज में विचलित व्यवहार, संघर्ष, संघर्ष तथा सामाजिक नियंत्रण के अध्ययन मध्य-अभि-सीमा सिद्धांत के आधार पर किए जा रहे हैं।

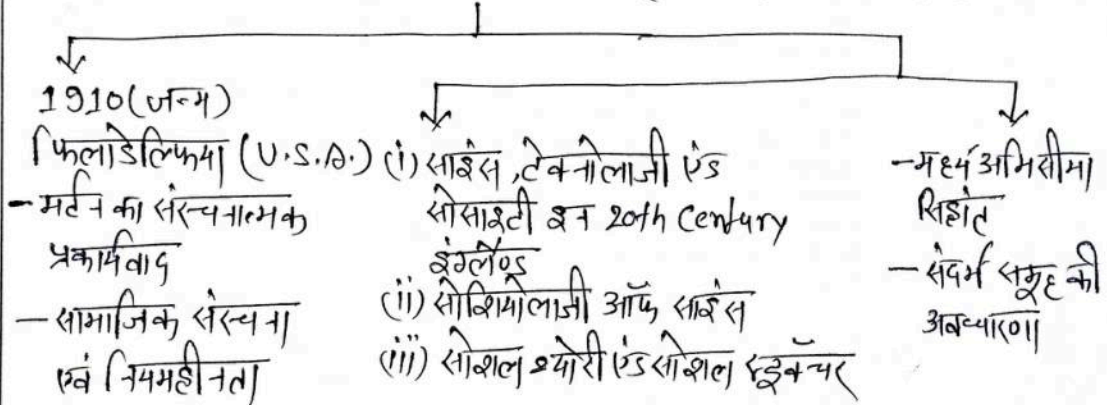
10705017

प्रश्नसं०-35

आर० के० मर्टन का समाजशास्त्रीय योगदान क्या है, व्याख्या करें?

उत्तर- मर्टन द्वारा "संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण" की भा-
रत में प्रस्तुत करते हुए, परम्परागत प्रकार्यावादियों के सिद्धांतों में
कमियों को बताना स्पष्ट कर दिया कि आधुनिक प्रकार्यावादी सिद्धांतकारों
में आपका अग्रणी स्थान है।

राबर्ट के० मर्टन (Robert K. Merton)



मर्टन द्वारा लिखित "Social Theory and Social Structure" सन् 1936 में प्रथम बार प्रकाशित हुई। इसे समाजशास्त्रीय साहित्य की कालजयी रचनाओं में शामिल किया जाता है। इसे मर्टन का सर्वश्रेष्ठ रचनाकर्म घोषित किया गया है। इसी पुस्तक में मह्य अमिसीमा सिद्धांत, सामाजिक संरचना व विसंगति, प्रकट तथा अन्तर्हित प्रकार्य (Manifest and Latent Functions), सेवर्म सूत्रों का सिद्धांत, ज्ञान का समाजशास्त्र तथा विज्ञान के समाजशास्त्र के अध्ययनों का विस्तृत विश्लेषण व व्याख्या की प्रस्तुत किया है।

10705017

प्रश्न सं०-34

तालकांत पारसेस के "परिवर्ती प्रतिमान" सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर- सामाजिक संबंधों के डि-माजन की एक विशिष्ट योजना परिवर्ती प्रतिमान (Permeable Variable) के नाम से जानी जाती है। इस योजना के प्रस्थापक विद्वान तालकांत पारसेस रहे हैं।

मूलतः यह योजना कर्तियों द्वारा सम्पन्न की जाने वाली अन्तः क्रियाओं के विभिन्न रूपों का अमूर्त प्रदर्शन है। इस योजना के अनुसार कर्तों के समक्ष क्रिया अथवा व्यवहार के कुछ वैकल्पिक जोड़े उपलब्ध होते हैं।

पारसेस ने परिवर्ती प्रतिमान (Permeable Variable) के पांच जोड़ों की योजना प्रस्तुत की है—

- (i) सार्वलौकिक बनाम विशिष्टतावादी
- (ii) जन्मपरक बनाम उपलब्धपरक
- (iii) भावात्मकता बनाम भावात्मक तटस्थता
- (iv) आत्महित बनाम सामूहिक हित
- (v) एकपक्षीय बनाम बहुपक्षीय

किसी सामाजिक स्थिति में व्यवहार करने के पूर्व कर्तों इन जोड़ों में से किसी एक को अपने व्यवहार के लिए चुनता है। परिवर्ती प्रतिमान की योजना का प्रयोग सामाजिक व्यवस्थाओं अथवा अन्तर्क्रिया के प्रतिरूपों, विशेषतः पारम्परिक एवं आधुनिक समाजों की तुलना या भिन्नता प्रकट करने के लिए किया जाता है।

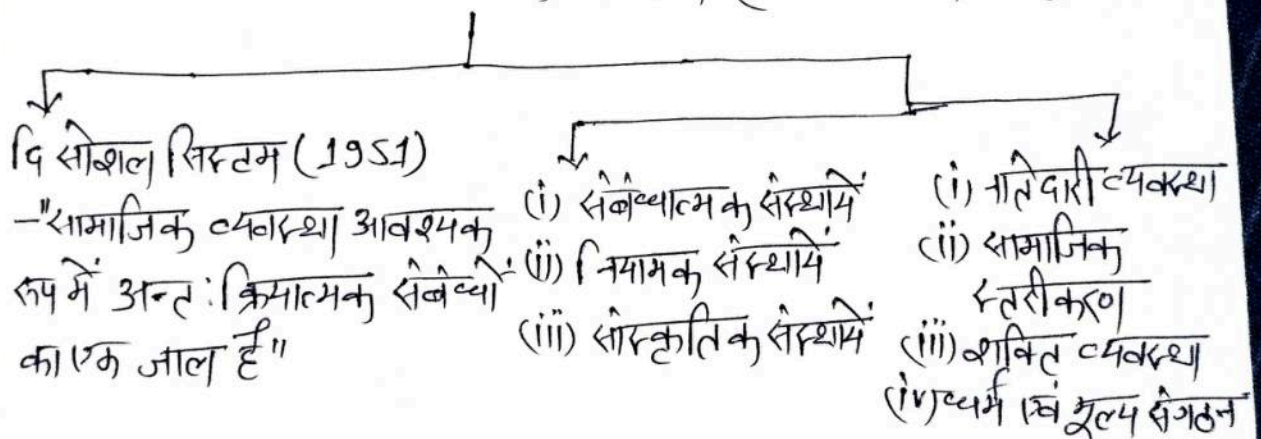
10705017

प्रश्न सं०-33

टालकाट पारसेस के "सामाजिक व्यवस्था" सिद्धांत की व्याख्या करें ?

उत्तर- पारसेस के अनुसार, "सामाजिक व्यवस्था तब उत्पन्न होती है जब की एक सामाजिक परिस्थिति में तथा सामान्य रूप से स्वीकृत सांस्कृतिक प्रतीकों की एक व्यवस्था के अन्तर्गत अनेक वैयक्तिक कर्त्ता अपनी इच्छाओं की आदर्श प्राप्ति के लिए पारस्परिक सामाजिक अन्तःक्रियाओं में लगे रहते हैं"।

सामाजिक व्यवस्था (Social System)



पारसेस ने कहा कि सामाजिक व्यवस्था में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के तत्वों का समावेश रहता है। सामाजिक नियंत्रण के आधारभूत साधन संस्थागत रूप में संगठित एक सामाजिक-व्यवस्था की स्वाभाविक अन्तःक्रिया में पाए जाते हैं। सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व व स्थिरता के लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि समाज के अधिकाधिक कर्त्ताओं की द्युनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करके, उन्हें क्रियाशील रहने के लिए प्रेरित किया जाये। जो कर्त्ताओं को सामाजिक क्रियाओं से संबंधित करती हैं।

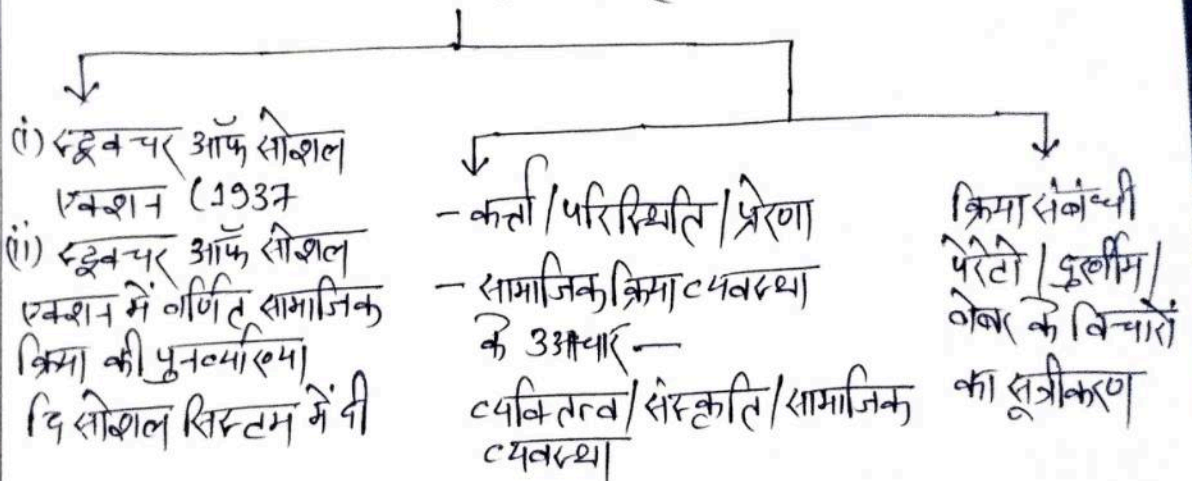
10/10/2017

प्रश्न सं०-32

टालकॉट पारसेस के "सामाजिक क्रिया" सिद्धांत को स्पष्ट करें?

उत्तर- पारसेस के अनुसार, समाज मनुष्यों के पारस्परिक संबंधों की वह सम्पूर्ण क्षेत्र है जो मानवीय क्रियाओं के फलस्वरूप बनता है। अतः स्पष्ट है कि मानवीय या सामाजिक क्रियाएँ सामाजिक संबंधों अर्थात् समाज की जन्म देती हैं।

सामाजिक क्रिया (Social Action)



पारसेस ने सामाजिक क्रिया सिद्धांत को सामाजिक व्यवस्था का एक मार्ग माना है। सामाजिक क्रिया में कर्ता/परिस्थितियों/प्रेरणा का महत्व है, ये क्रिया का कार्यात्मक पक्ष है पर क्रिया का उद्देश्य भी होता है। पारसेस ने कहा कि क्रिया हमेशा सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्ष से संबंधित रही है, जिस के द्वारा व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया चलती रहती है। अतः क्रियाएँ व्यक्ति या व्यक्तियों को पारस्परिक संबंधों को सांस्कृतिक व्यवस्था या स्वीकृत प्रतीकों द्वारा जोड़ती हैं।

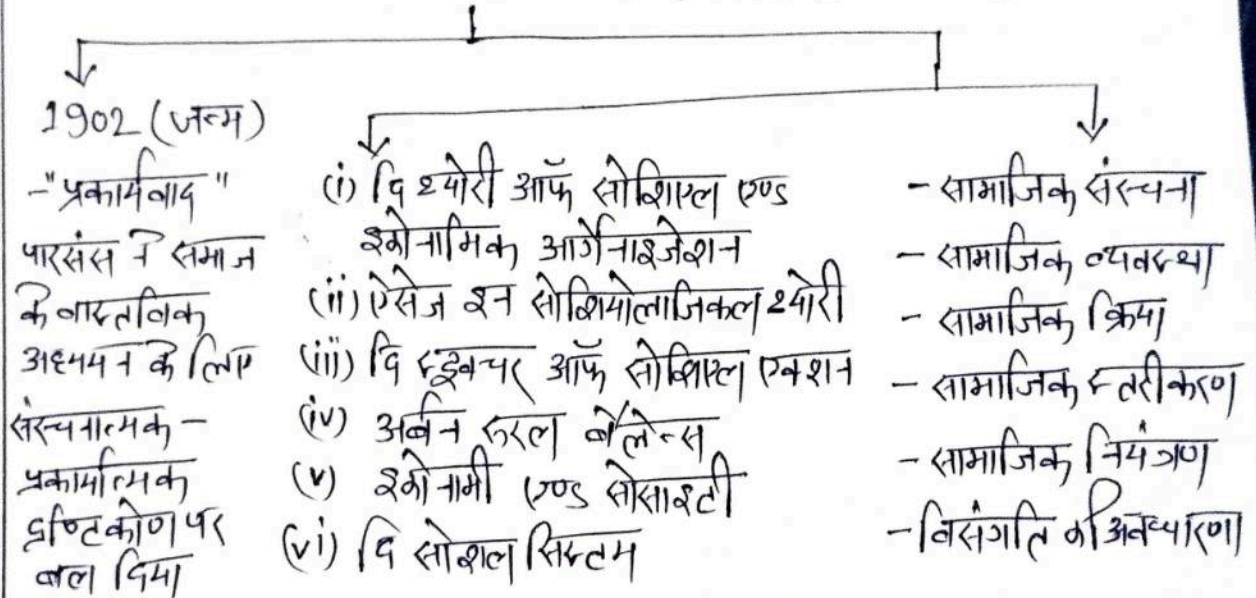
10705017

प्रश्न सं०-31

तालकांत पारसंस के समाजशास्त्रीय योगदान की चर्चा करें?

उत्तर- तालकांत पारसंस उन प्रख्यात समकालीन समाजशास्त्रीयों में से एक हैं जिन्होंने समाजशास्त्रीय ज्ञान को विद्वत्, परिशुद्ध व परिमार्जित करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

तालकांत पारसंस (Taleont Parsons)



पारसंस ने तार्किक ढंग से आधुनिक समाजों, संरचनाओं तथा प्रक्रियाओं के बौद्धिक व विश्लेषण को व्यवस्थित किया है। आधुनिक समाज में पायी जाने वाली क्रियात्मक जटिलता कैसे सामाजिक संरचना तथा सामाजिक संबंधों को बदलती है, इस पर पारसंस ने काफी काम किया। प्रकार्यवाद के सिद्धांत को नवीनतम रूप (संरचनात्मक-प्रकार्यवादी दृष्टिकोण) देने में पारसंस की धमिका पाद किया जाता है। नव-प्रकार्यवादी विचारक भी पारसंस की विचारधारा का समर्थन करते हुए नये आयाम प्रस्तुत करते हैं।

26705017

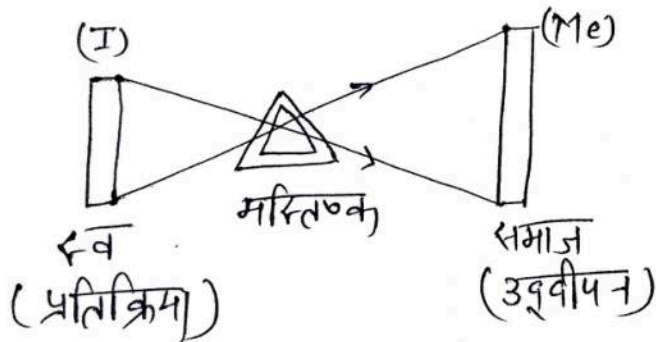
प्रश्न सं०-30

जी० एच० गीड के "आई एण्ड मी" सिद्धांत का व्याख्या की ?

उत्तर- मैं (आई) और मुझे (मी) स्वचेतना को समझने हेतु व मानवीय अन्तर्क्रिया का अध्ययन करने हेतु गीड का एक महत्वपूर्ण योगदान है।

स्वचेतना तीन विकासवादी अवस्थाओं से विकसित होती है-

- (i) अनुकूलीय क्रियाओं की अवस्था- (दो वर्ष की आयु)
- (ii) क्रीड़ा (Play)- (तीन वर्ष की आयु)
- (iii) खेल (Game)- "यह जटिल प्रक्रिया है इसमें व्यक्ति की चेतना में वयस्कता आ जाती है"



"सामाजिक संरचना का वह रूप जो उद्दीपन द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। मानव मस्तिष्क की संरचना है जो प्रतिक्रिया (प्रत्युत्तर) द्वारा व्यक्त होती है।"

बच्चों में अन्तर्क्रिया के प्रतीकों में भेदभाव व अंतर करने की क्षमता विकसित होती जाती है, उसके मस्तिष्क का विकास प्रारम्भ हो जाता है, मानव में तार्किक निर्णय लेने व स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय लेने की क्षमता का विकास होने लगता है। मस्तिष्क का विकास सम्प्रेषण व अधीपूर्ण अन्तर्क्रिया द्वारा होता है। गीड के अनुसार अधीपूर्ण सम्प्रेषण के रूप में अन्तर्क्रिया तभी व्यक्त होती है जबकि व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों की श्रमिका ग्रहण करने की क्षमता विकसित हो जाती है।

10705017

प्रश्न सं०-29

जी० एच० मीड के "प्रतीकात्मक अन्तर्क्रियावाद" की व्याख्या करें ?

उत्तर- जी० एच० मीड का प्रतीकात्मक अन्तर्क्रियावाद (Symbolic Interactionism) "स्व" और "प्रतीक" है। जब मनुष्य एक-दूसरे के साथ वात्सल्य करते हैं तब प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। व्यक्ति के स्व का विकास दूसरों की भूमिका को अपना लेने से होता है।

अर्नेल्ड रोस, कहते हैं दूसरों की भूमिका को ग्रहण किए बिना प्रतीकों का विकास नहीं हो सकता है। जब तक दूसरों की भूमिकाओं को अपनाया नहीं जाता, व्यक्ति समाज के प्रतीकों, मूल्यों, मानकों आदि को समझ नहीं सकता है।

मीड के अनुसार "स्व" के प्रमुख कार्य निम्न हैं—

- (i) सम्प्रेषण
- (ii) परिस्थिति का विश्लेषण
- (iii) स्व-निर्देशन तथा स्व-नियंत्रण
- (iv) स्व-निर्णय
- (v) परिचय
- (vi) मस्तिष्क एवं समस्या समाधान

मीड ने सामाजिक जीवन के स्वभाव के विकास हेतु वैज्ञानिक पहलु के प्रयोग पर बल दिया है। मीड ने व्यक्ति के सामाजिक जगत की समाजशास्त्रीय दृष्टि से समझने के दो प्रोत्तों का उल्लेख किया है—(i) व्यवहारवादी मनोविज्ञान तथा (ii) वैज्ञानिक अन्वेषण की प्रक्रिया।

A0705017

प्रश्न सं०-28

जी० एच० मीड के सामाजशास्त्रीय योगदान पर-वर्णन करें ?

उत्तर- जार्ज हरबर्ट मीड (1863-1931) ने सामाजशास्त्र को "सामाजिक मनोविज्ञान" की सेवा दी, और कहा जिसकी मुख्य उद्देश्य "समाज और व्यक्ति" में सम्बंध का अध्ययन करना है। परम्परावादी मनोवैज्ञानिक सिद्धांत में सोचा जाता था कि पशु एवं मानव व्यवहार में मात्रा तथा प्रकार का ही अंतर है। मानव तार्किक क्रिया कर सकता है, लक्ष्यों को नियंत्रित कर सकता है तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने की योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन कर सकता है। मानव तार्किक क्रियाओं द्वारा अपने व्यवहार को निर्देशित व नियंत्रित कर सकता है।

जी० एच० मीड का लेखन निम्नलिखित है -

- (i) Mind, Self and Society (1934)
- (ii) The Philosophy of the Present (1932)
- (iii) Movements of Thought in the 19th Century (1936)
- (iv) The Philosophy of the Act (1938)

जी० एच० मीड ने सामाजिक मनोविज्ञान तथा सामाजिक क्रिया, तार्किकता तथा स्वच्छंदता, सामान्यीकृत अन्य एवं मस्तिष्क, स्व तथा समाज पर प्रकाश डाला। सामाजिक मनोविज्ञान में "स्व" तथा प्रतीकों, चिन्हों का प्रयोग एकदम नव्यासी कदम था। इस प्रयोग आगे के सामाजशास्त्रीयों ने व्यापक रूप से किया है।

10705011

प्रश्न सं०-27

मैक्स वेबर द्वारा सम्पादित "प्रोटेस्टेंट आचार और पूँजीवाद का विकास" रिपोर्ट को स्पष्ट करें।

उत्तर— "प्रोटेस्टेंट आचार और पूँजीवाद का विकास"

(Protestant Ethics and Rise of Capitalism) को प्रमाणित

करने के लिए वेबर ने विश्व के 6 महान धर्मों का तुलनात्मक

अध्ययन किया। ये धर्म हैं - कन्फ्यूशियन, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई,

इस्लाम तथा यहूदी धर्म। वेबर ने इनमें से प्रत्येक धर्म के

आर्थिक आचारों का विश्लेषण किया, और फिर उन आचारों

के, उस धर्म विशेष अनुयायियों के आर्थिक तथा सामाजिक

संगठन पर पड़ने वाले, प्रभावों को सिद्ध किया।

प्रोटेस्टेंट धर्म और पूँजीवाद के उक्त सम्बन्ध को प्रमाणित करने के लिए वेबर ने इन दोनों के "आदर्श-प्रारूपों" को पूरा है-

(i) काम करना ही बड़ा गुण है - प्रोटेस्टेंट आचार है

(ii) व्यावसायिक आचार - "खालीमत रहे"

(iii) श्रृंखला पर ध्यान देने की मान्यता - जो बर्किंग व्यवस्था का सारबनी

(iv) शराबखोरी बुरी आदत है - "नेक बनो, ईमानदार रहे"

(v) लचक को प्रोत्साहन "एकरूपता बचाना - एकरूपता कमाना है"

(vi) "कर्म ही पूजा है" - अवकाश को दत्तोत्साहित करता है

इस विवेचना से स्पष्ट होता है कि धर्म तथा आर्थिक व सामाजिक संगठन के मध्य स्पष्ट सम्बन्ध है। धार्मिक द्वाय कर्म को प्रेरित करते हैं और ये कर्म आर्थिक व सामाजिक संगठन को निश्चित करते हैं।

10/10/2017

प्रश्न सं-26

मेबर वेबर की सत्ता की अवधारणा को स्पष्ट करे?

उत्तर- मेबर वेबर ने सत्ता की अवधारणा (Concept of Authority) को शक्ति (Power) के आधार पर व्यवस्त किया है -

शक्ति (Power) → वैय्य (संस्थागत अधिकार)
→ अवैय्य (चोर/शूक/लुटेरो की शक्ति)

सत्ता (Authority) - "तात्किक वैय्यनिक शक्ति का स्वरूप"

↓
परम्परागत सत्ता करिष्माई सत्ता वैय्यनिक सत्ता
- "राजा का पुत्र राजा" - जादूगर, पीर, पैगम्बर, अवतार, धार्मिक नेता आदि - प्रतिनिधित्व शासन व्यवस्था जैसे- संसदीय लोकतंत्र

सत्ता वह अवधारणा है, जो शक्ति को नियमों और कानूनों में बाँध देती है। शक्ति ही सत्ता का आधार होती है। वैय्यता सत्ता का शूल आधार है क्योंकि सत्ता का पालन सत्ताधारी और अधीनस्थों के बीच शूलों की समानता के आधार पर किया जाता है। सत्ता का प्रकार - चाहे वो परम्परागत हो, या - समताकारिक अथवा वैय्यनिक, अनुयायी या समर्थक उसे वैय्यता प्रदान करते हैं। वर्तमान में संसदीय प्रणाली में जनमत या जनोद्देश सत्ता प्राप्ति का मार्ग है। लोग सत्ता को वैय्यता प्रदान करते हैं, बहुमत प्राप्त दल या गठबंधन सरकार का वैय्य रूप ग्रहण करता है।

20705017

प्रश्न सं०-२९

मैक्स वेबर के सामाजिक क्रिया के सिद्धांत की विवेचना करो?

उत्तर— मैक्स वेबर के अनुसार, " किसी भी क्रिया को हमें तभी सामाजिक क्रिया कहना चाहिए जब कि उस क्रिया को करने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों के हाथ लगाए जाने वाले व्यक्तिनिष्ठ अर्थ के अनुसार उस क्रिया में दूसरे व्यक्तियों के मनोभाव तथा क्रियाओं का समावेश हो और उन्हीं के अनुसार उसकी गतिविधि नियंत्रित हो" मैक्स वेबर ने सामाजिक क्रियाओं को ५ श्रेणियों में विभाजित किया है—

- (i) तार्किक क्रिया — लक्ष्य एवं साधनों का पूर्ण संतुलन
- (ii) श्रव्यांकनात्मक क्रिया — कलात्मक / व्यापारिक / नैतिक आध्यात्मिक
- (iii) प्रभावनात्मक क्रिया — आवेगों या संबंधों से प्रेरित
- (iv) परम्परागत क्रिया — प्रथाओं का अनुसरण

मैक्स वेबर के मतानुसार सामाजिक क्रिया ही समाजशास्त्र की केन्द्रीय अध्ययन वस्तु है। सामाजिक क्रिया साध्यात्मिक क्रिया या वैयक्तिक क्रिया से भिन्न है। वैयक्तिक क्रिया व्यक्ति की अपनी क्रिया होती है और उसे व्यक्तिगत स्तर पर ही किया जाता है। इसका कोई लेना-देना या संबंध दूसरे लोगों की क्रियाओं से नहीं होता है। इसके विपरीत सामाजिक क्रिया वह क्रिया है जोकि दूसरे लोगों की क्रियाओं से न केवल सम्बन्धित होती है, अपितु उसके हाथ प्रभावित भी होती है।

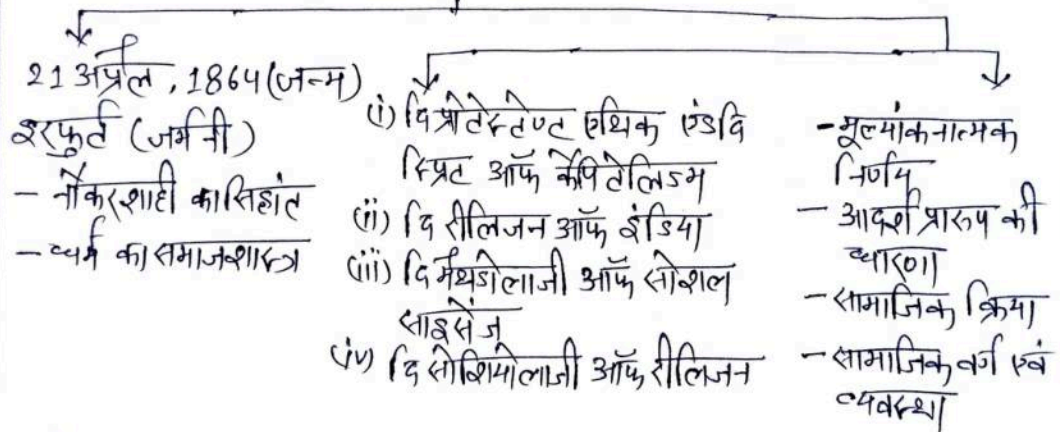
20/10/2017

प्रश्न सं०-24

मैक्स वेबर के समाजशास्त्रीय योगदान की-चर्चा करें?

उत्तर- समाज तथा सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रति मैक्स वेबर का दृष्टिकोण निम्नानुसार था। आपने समाजशास्त्र को सामाजिक क्रियाओं के अधीनस्थ करने वाला विज्ञान कहा और समाज को उन्हीं सामाजिक अन्तःक्रियाओं की अधीनस्थ अभिव्यक्ति के रूप में माना।

मैक्स वेबर (Max Weber)



मैक्स वेबर ने अपने अध्ययन में दार्शनिक या काल्पनिक विचारों को बिल्कुल ही आने नहीं दिया। उनका सतत प्रयास यही रहा कि सामाजिक व्यवस्थाओं के अध्ययन आप एक वैज्ञानिक मान बनाए रखें। आदर्श प्रारूप की व्याख्या का विकास वेबर का प्रमुख कार्य माना जाता है। आदर्श प्रारूप में सामाजिक वैज्ञानिकों केवल उन्हीं अवस्थाओं का अध्ययन कार्य में प्रयोग करना चाहिए जो कि तर्कसंगत, संवेदनशील तथा प्रयोगसिद्ध हो।

20/05/21

प्रश्न सं०-23

कार्ल मार्क्स रीडार प्रतिपादित "अलगाव" की व्याख्या करें ?

उत्तर— मार्क्स ने "दास कैपिटल" के प्रथम खण्ड में अलगाववादी श्रमिकों की चर्चा विस्तार से की है। पूँजीवादी व्यवस्था के साथ जीवन की दशाओं में बहुत तेजी से परिवर्तन आया है। ज्यों-ज्यों पूँजीवाद का विस्तार हुआ ज्यों-ज्यों कारणों और मिलों में काम करने वाले श्रमिकों में अलगाव का विस्तार हुआ।

अलगाव के 4 स्वरूप निम्न हैं—

- (i) आदमी का प्रकृति से अलगाव
- (ii) आदमी का अपने दृष्ट भिन्न से अलगाव
- (iii) आदमी का अपने काम तथा स्वयं मस्तिष्क से अलगाव
- (iv) आदमी का स्वयं से अलगाव

अलगाव/अनात्मिकरण ऐसी विनाशकारी स्थिति है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति और व्यक्तियों से एकदम दूर हो जाता है, उसके बर्द-गिर्द क्या हो रहा है उसे कुछ बात नहीं होता है। पूँजीवादी व्यवस्था में कामगार कभी भी अपने आपको उत्पादन और उससे होने वाले लाभ के साथ जोड़ता नहीं है। लाभ और उत्पादन से उसको कोई मतलब नहीं होता। उसे तो केवल अपनी दिहाड़ी या वेतन से ही मतलब रहता है।

10/10/2017

प्रश्न सं०-22

कार्ल मार्क्स के "वर्ग संघर्ष" सिद्धांत की विवेचना करें?

उत्तर- मार्क्स और एंजिल्स ने "कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो" में लिखा है-
"अभी तक आविर्भूत सभी वर्गों-मार्ब पूर्ण समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। स्वतंत्र मनुष्य और दास, पैद्रीशियन और प्लेबियन, सामंत और भू-दास, शिल्प संघ का उदत्ताद और कारीगर और मजदूर तथा कारीगर। संक्षेप में शोषक और शोषित बराबर एक-दूसरे का विरोध करते आए हैं।"

मार्क्स के अनुसार "पूँजीपति (बुर्जुआ) वर्ग" शोषण बढ़ाने, पूँजीवादी प्रणाली को बनाये रखने और अपने आर्थिक तथा राजनैतिक प्रभुत्व को सुदृढ़ करने में दिलचस्पी रखता है। दूसरी ओर "मजदूर वर्ग" पूँजीवादी व्यवस्था में अपनी वस्तुगत स्थिति के कारण शोषण का उन्मूलन करने, निजी स्वामित्व और उसपर आधारित सामाजिक उत्पीड़न को खत्म करने तथा शोषक राज्य को गिरा देने में दिलचस्पी रखता है।

मार्क्स कहता है, जब तक मजदूरों में मिथ्या चेतना का स्थान वास्तविक चेतना नहीं ले लेती तब तक मजदूर वर्ग के रूप में काम नहीं कर सकते हैं। किसी भी वर्ग के लिए यह वर्ग चेतना आवश्यक है कि हमारे काम की दबावें दिहाड़ी या पगार और शोषण एक समान हैं। वर्ग तभी बनता है जब वह दूसरे वर्गों को अपना दुश्मन समझता है, क्योंकि वर्ग निर्माण का आधार ही प्रतिरोध है।

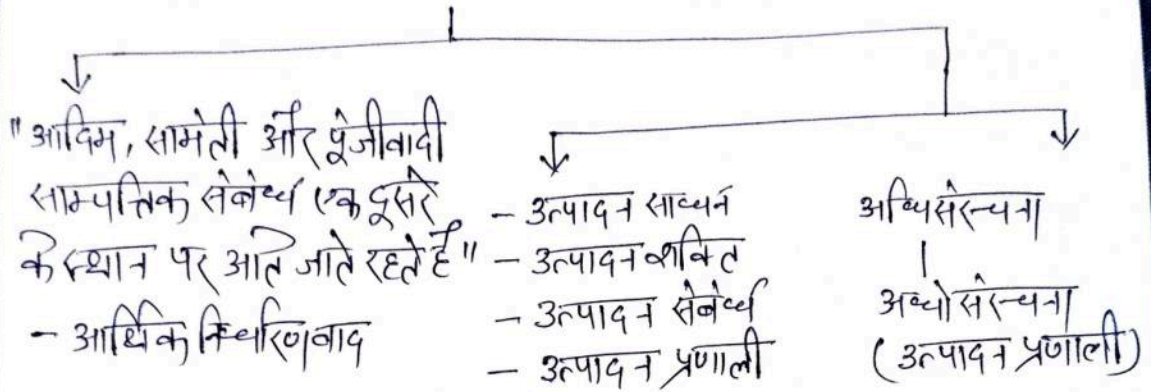
10705017

प्रश्न सं-21

कार्ल मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद की व्याख्या करें?

उत्तर-

ऐतिहासिक भौतिकवाद (Historical Materialism)



मार्क्स इतिहास की अपनी व्याख्या में "उत्पादन प्रणाली" को अत्यधिक महत्व देते हैं क्योंकि, जैसा की पहले कहा जा चुका है, उनके मतानुसार सर्वप्रथम ऐतिहासिक कार्य अपने को जीवित रखने के लिए आवश्यक भौतिक मूल्यों या वस्तुओं के उत्पादन से संबंधित रहा है।

इतिहास तभी विज्ञान हो सकता है जबकि उसमें उत्पादन प्रणाली और तत्सम्बंधित सामाजिक व राजनैतिक संस्थाओं, कला, धर्म, आचार, दर्शन, साहित्य के साथ-2 भौतिक मूल्यों का उत्पादन करने वाली मेहनतकश जनता का भी अध्ययन, विश्लेषण तथा निरूपण हो। ये भौतिक परिस्थितियाँ भौतिक मूल्यों की उत्पादन प्रणाली द्वारा ही नियंत्रित और नियमित होती हैं। समस्त ऐतिहासिक घटनाओं के विकास का रहस्य इसी में छिपा हुआ है।

10/05/11

प्रश्न सं०-20

माक्सिवादी ड-डाल्फिन गैतिकवाद की व्याख्या करे?

उत्तर- माक्सि ने अपने एक ड-डाल्फिन गैतिकवाद के नियम या प्रणाली को कुछ सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रतिपादित किया है और उनमें सर्व प्रमुख उद्देश्य यह है कि आप इसी ड-डाल्फिन विकासवाद के आवार पर यह सिद्ध करना चाहते हैं कि पूंजीवादी समाज का विनाश अनिवार्य है। ड-डाल्फिन विकासवाद के अनुसार यदि समाज का सब-कुछ गतिशील और प्रगतिशील है, यदि पुराने का विनाश और नवीन का उद्भव ही विकास का नियम है तो निस्संदेह ही पूंजीवादी, निजी सम्पत्ति व शोषण, जमींदारों के अधीन किसानों की पराधीनता व पूंजीपतियों के अधीन श्रमिकों की पराधीनता निररस्थायी नहीं हो सकती है। पूंजीवादी व्यवस्था का स्थान एक दिन समाजवादी व्यवस्था ले ही लेगी जिस प्रकार कि सामंतवादी (Feudal) व्यवस्था का स्थान पूंजीवादी व्यवस्था ने एक समय ले लिया था। यह ड-डाल्फिनवाद पूंजीपतियों के लिए चेतवनी स्वरूप इस लिये है कि यह इस सत्य की ओर ध्यान आकषित करता है कि उनका अस्तित्व अव्यक्त दिनों तक नहीं रहेगा क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का निररस्थायी नियम है।

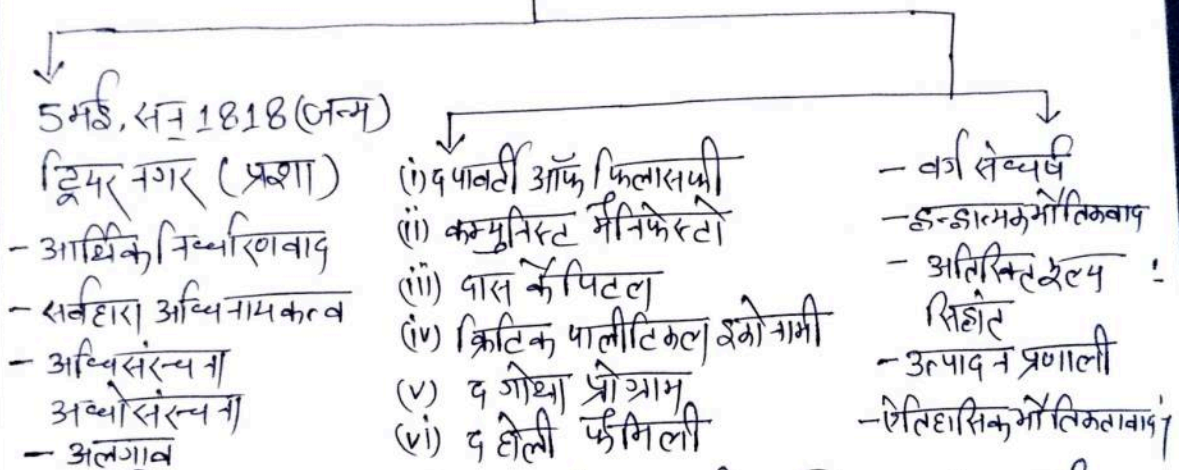
10705017

प्रश्न सं०-19

कार्ल मार्क्स के समाजशास्त्रीय योगदान पर-चर्चा करें?

उत्तर- कार्ल मार्क्स ने ही सर्वप्रथम साम्यवाद को न केवल एक नवीन और मौलिक रूप प्रदान किया बल्कि उसे ऐसे सुदृढ़ वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित किया जो दिन-प्रतिदिन हाइटर ही होता जा रहा है।

कार्ल मार्क्स (Karl Marx)



मार्क्स के सिद्धांत "स्वर्ग" से नहीं "व्यरती" से सम्बन्धित है और वह भी व्यरती के सबसे दलित या शोषित वर्ग - सर्वहारा से। शोषण को संरचनात्मक मानते हुए मार्क्स ने व्यवस्था परिवर्तन या क्रान्ति की बात कही है, सांख्यिक रूप से देखें तो मार्क्स के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। सारी समस्याएँ चाहे वो सामाजिक हों, आर्थिक हों या फिर राजनीतिक सभी जगह वर्ग सेव्यर्ष हैं। शोषण के विरुद्ध जब भी आवाज उठेगी, मार्क्स सदैव प्रासंगिक रहेंगे, व्यवस्था परिवर्तन के लिए। समस्याएँ संस्थागत हैं, और उनका हल हमें संस्थागत संरचना में तलाशना चाहिए।

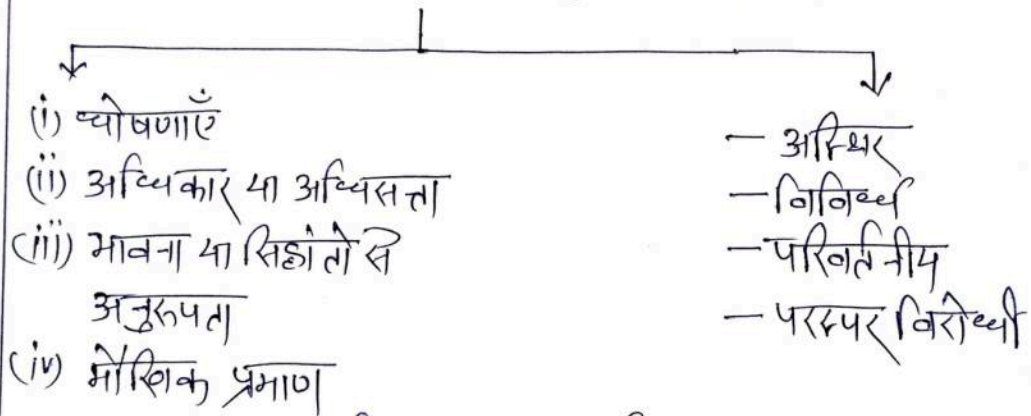
10705017

प्रश्न सं 0-18

पेरैलो की "ग्रान्त-तर्क की अवधारणा" की विवेचना करें?

उत्तर- "अपने व्यवहार या कार्य के औचित्य को प्रमाणित करने के लिए व्यक्ति अपनी प्रकृति, परिस्थितियों और आवश्यकों के अनुसार अनेक धूमिलतायें या सफाईयों प्रस्तुत करता है। इन्हीं को पेरैलो ने ग्रान्त-तर्क की संज्ञा दी है।

ग्रान्त-तर्क (Deviations)



पेरैलो ने कहा है कि, ग्रान्त-तर्क सत्य नहीं होते, इस कारण सामाजिक व्यक्तियों की व्याख्या में इनके प्रभावों से प्रत्येक वैज्ञानिक को सर्वत्र सचेत रहना चाहिए।

पूर्व के अधिकतर राजनीतिक, आर्थिक, समाजशास्त्रीय तथा अन्य सिद्धांत असंख्य ग्रान्त-तर्कों द्वारा प्रभावित थे।

पेरैलो यह भी मानते हैं कि, कितने सत्य ऐसे भी हैं जो कि सामाजिक व्यवस्था या संगठन के लिए लाभप्रद तर्क सिद्ध हैं। पेरैलो ने ग्रान्त-तर्कों पर अत्यधिक महत्व दिया क्योंकि वह व्यक्तियों से गहरा जुड़ाव रखते हैं।

20/05/21

प्रश्न सं०-17

पेरेटो की "विशिष्ट-चालक" अवधारणा को स्पष्ट करें?

उत्तर— मानव व्यवहार के विश्लेषण में "व्यवहार का स्थिर पक्ष" को पेरेटो ने "विशिष्ट-चालक" की संज्ञा दी है।

"जिस प्रकार थर्मामीटर में पारे का बढ़ना ताप के बढ़ने की अभिव्यक्ति है, उसी प्रकार विशिष्ट-चालक मूल-प्रवृत्तियों और भावनाओं की अभिव्यक्ति है"।

विशिष्ट-चालक (Residues)

- | | |
|--|-------------------|
| ↓ | ↓ |
| (i) सम्मिलन के विशिष्ट-चालक | - स्थिरता |
| (ii) समूह के स्थायित्व के विशिष्ट-चालक | - अभिव्यक्तिशीलता |
| (iii) वाद्यक्रियाओं द्वारा भावनाओं की अभिव्यक्ति के विशिष्ट-चालक | - जै-तार्किक |
| (iv) सामाजिकता संबंधी विशिष्ट-चालक | |
| (v) व्यक्तित्व संबंधी विशिष्ट-चालक | |
| (vi) काम संबंधी विशिष्ट-चालक | |

वास्तविकता यह है कि कोई भी सामाजिक व्यवस्था किसी अंतिम या पूर्ण रूप से स्थिर सिद्धांत के आवधार पर नहीं चलती बल्कि यह सदैव सापेक्षिक होती है और इसमें परिवर्तन भी होता रहता है। इन परिवर्तनों के साथ-2 उक्त विशिष्ट-चालकों व्यक्तियों और वितरण में भी परिवर्तन होता जाता है।

पेरेटो के अनुसार, विशिष्ट विचार समय कारक और सामाजिक परिस्थितियों से सम्बन्धित है और इनमें परिवर्तन के साथ-2 ये स्वयं भी परिवर्तित होते रहते हैं।

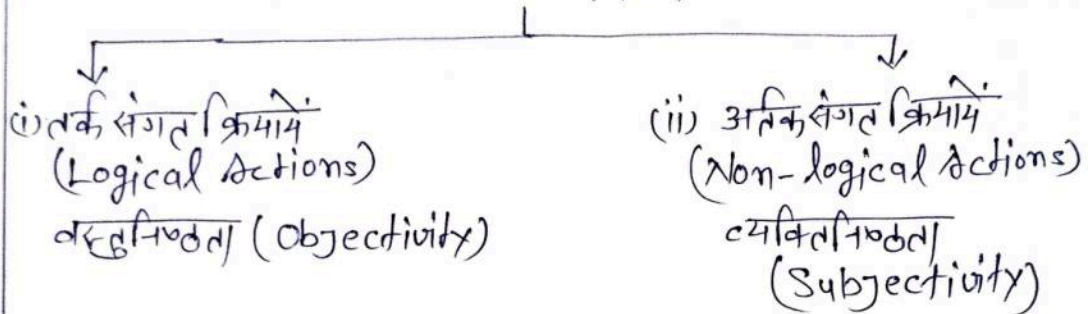
20705017

प्रश्न सं०-16

पेरेटो ज्ञात प्रकृत तर्क संगत एवं अतर्क संगत क्रियाओं को स्फुट करें?

उत्तर- पेरेटो ने अपने अध्ययन में समाज में पाई जाने वाली मानवीय क्रियाओं का वर्गीकरण दो भागों में किया है -

सामाजिक क्रिया



सामाजिक क्रियाओं में "लक्ष्य और साध्य" के मध्य संतुलन या तर्कसंगतता अनिवार्य है। लक्ष्य और साध्य के मध्य सामंजस्य वाली क्रियाओं का आधार वस्तुनिष्ठ होता है, इसलिए ये क्रियायें तर्क संगत क्रियायें कहलाती हैं। पेरेटो के अनुसार मानवीय क्रियायें तर्कसंगत हो सकती हैं और अतर्कसंगत भी। पेरेटो के अनुसार मानव क्रियाओं के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि सर्वत्र और सभी कालक्रमों में तर्कसंगत क्रियाओं का नहीं, बल्कि अतर्कसंगत क्रियाओं का बोलबाला रहा है। अतर्कसंगत क्रियाओं को निरर्थक तथा व्याप्यकीय समझना बहुत बड़ी गलती होगी। परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि अतर्कसंगत क्रियाओं को विज्ञान की सामग्री मान लिया जाये।

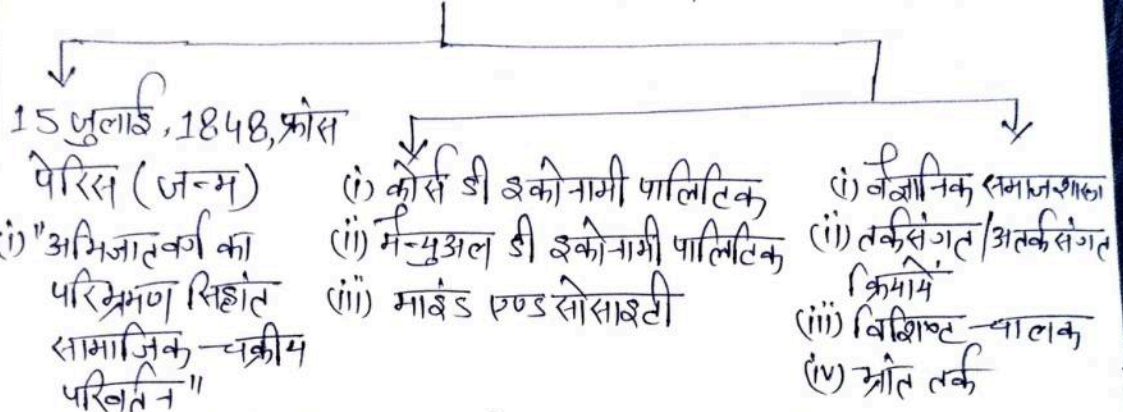
20705017

प्रश्न सं०-15

विलफ्रेडो पेरेटो के समाजशास्त्रीय योगदान की चर्चा करें?

उत्तर-

विलफ्रेडो पेरेटो (Vilfredo Pareto)



विलफ्रेडो पेरेटो ने मनुष्य की अव्यक्त क्रियाओं में छिपे हुए अतार्किक तत्व या आव्यार को इस प्रकार उद्घाटित किया जैसा कि अब तक किसी भी सामाजिक विचारक ने नहीं किया था। समाजशास्त्रीय विचारधारा के क्षेत्र में पेरेटो का दूसरा महत्वपूर्ण योगदान यह है कि आपने समाजशास्त्र को एक यथार्थ वैज्ञानिक स्तर तक उन्नत करने का सबसे सफल प्रयास किया। पेरेटो ने बारम्बार इस बात पर जल दिया कि समाजशास्त्र के क्षेत्र में जो ८५ वर्ष के सिद्धांत, अवधारणाएं तथा नियमों का प्रवेश हो चुका है, उनसे हृदय से बचने की आवश्यकता है, नहीं तो समाजशास्त्र केवल नाममात्र का ही विज्ञान रहेगा। किसी भी सामाजिक चटना का वास्तविक अध्ययन तभी सम्भव है जबकि दूसरी चटनाओं से सम्बन्धित मान कर उनका अध्ययन किया जाये।

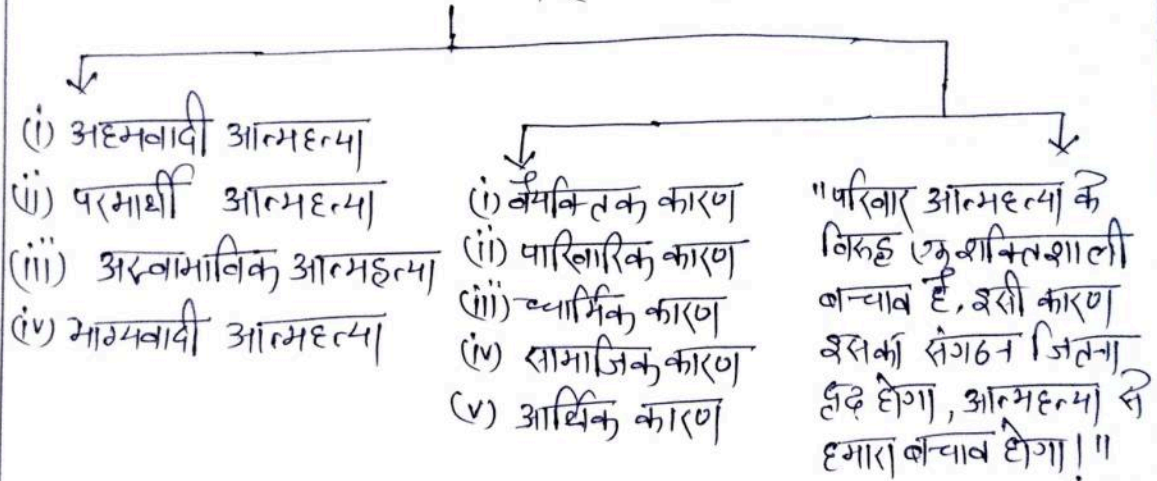
10705017

प्रश्न सं०-14

दुर्लभ के "आत्महत्या के सिद्धांत" की व्याख्या करें?

उत्तर- दुर्लभ की "Le Suicide" नामक पुस्तक आत्महत्या पर एक अनुपम ग्रंथ मानी जाती है। इस पुस्तक में आत्महत्या से सम्बन्धित कितने ही आँकड़ों को एकत्रित करके आपने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि आत्महत्या निश्चित रूप से एक सामाजिक घटना है।

आत्महत्या (Suicide)



समाज की जटिलता, आधुनिक समाज में आत्महत्याओं की संख्या निरंतर बढ़ रही है, यह एक असामान्य या व्यापकीय घटना के रूप में स्वीकार करना चाहिये। दुर्लभ कहते हैं कि आत्महत्या को रोकने में पारिवारिक-समाज, राजनीतिक-समाज, धार्मिक-समाज तथा शिक्षा आदि के क्षेत्रों में परतू आत्महत्या की बढ़ती हुई संख्या को रोकने में व्यावसायिक समूह या निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

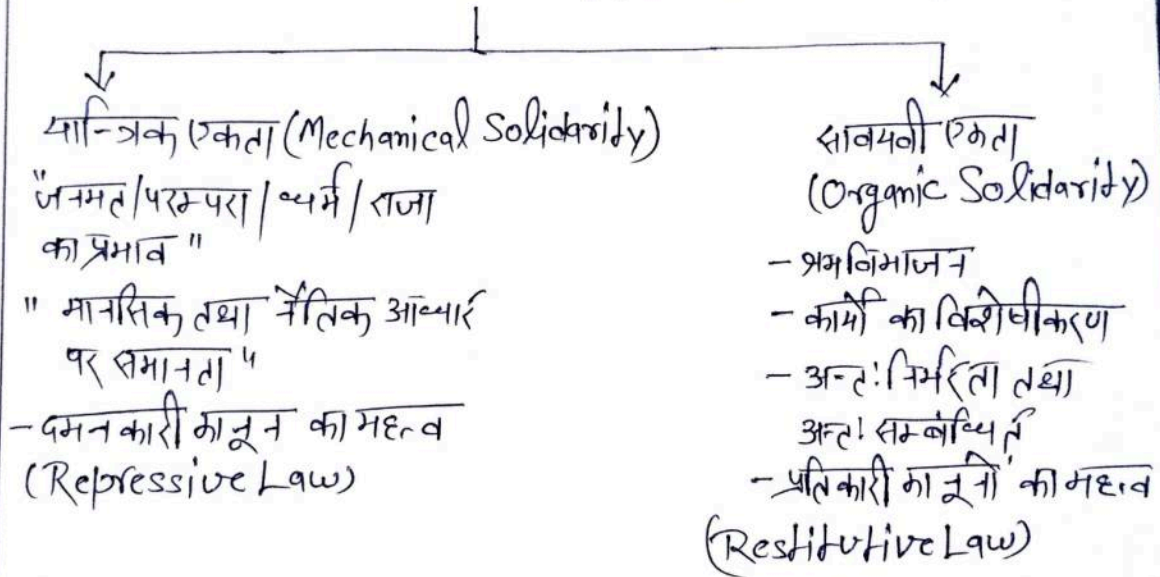
10705011

प्रश्न सं०-13

दुर्लभ के "यांत्रिक एकता एवं सावयवी एकता" के संक्षेप में बतलाएँ?

उत्तर- दुर्लभ की प्रख्यात पुस्तक "सोशल डिवीजन ऑफ लेबर" में "सामाजिक एकता का सिद्धांत" (Theory of Social Solidarity) का विश्लेषण है।

सामाजिक एकता (Social Solidarity)



सरल समाज, "यांत्रिक एकता" वाले समाज होते हैं, क्योंकि व्यक्ति के रूप में किसी का भी कोई महत्व नहीं था और व्यक्ति का व्यक्तिगत पक्ष सामूहिक व्यक्तित्व में मिल जाता था। व्यक्ति समाज के साथ यन्त्रवत् सौम्यता, काम करता और अक्षेत्रों का पालन करता था। आधुनिक जटिल समाज में प्रभुविभाजन और विशेषीकरण होते हुए भी व्यक्ति और व्यक्ति में, व्यक्ति और समूह में, समूह और समूह में एक पारस्परिक सम्बन्ध, पारस्परिक निर्भरता एवं एकता है। यही "सावयवी एकता" की स्थिति है।

20705017

प्रश्न सं०-12

दुर्लभिम द्वारा प्रतिपादित "सामाजिक तथ्य" सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर- दुर्लभिम के अनुसार "सामाजिक तथ्य व्यवहार (विचार), अनुभव या क्रिया का वह पक्ष है जिसका निरीक्षण वस्तुनिष्ठ रूप में सम्भव है और जो व्यक्ति को एक विशेष ढंग से व्यवहार करने को बाध्य करता है"।

दुर्लभिम ने सामाजिक तथ्य की चार विशेषताओं का उल्लेख किया है-

- (i) सामाजिक तथ्य एक ऐसी वस्तु है जिसमें कुछ विशेष गुण होते हैं जिन्हें (गुणों को) बाहरी तौर पर देखा जा सकता है।
- (ii) सामाजिक तथ्य एक ऐसी वस्तु है जिसको केवल अनुभव के द्वारा ही जाना जा सकता है।
- (iii) सामाजिक तथ्य एक ऐसी वस्तु है जिसका अस्तित्व मनुष्य पर बिल्कुल ही निर्भर नहीं है।
- (iv) सामाजिक तथ्य एक ऐसी वस्तु है जिसको केवल बाहरी तौर पर देखकर ही जाना जा सकता है।

दुर्लभिम ने सामाजिक तथ्यों में "सामाजिक दबाव या बाध्यता" की इस विशेषता को समझाने के लिए अनेक उदाहरणों को प्रस्तुत किया है जैसे- नैतिक नियम, धार्मिक विश्वास, वित्तीय व्यवस्थाएँ आदि सभी मनुष्य के व्यवहार व कार्य करने के तरीकों को अत्यधिक प्रभावित करते हैं।

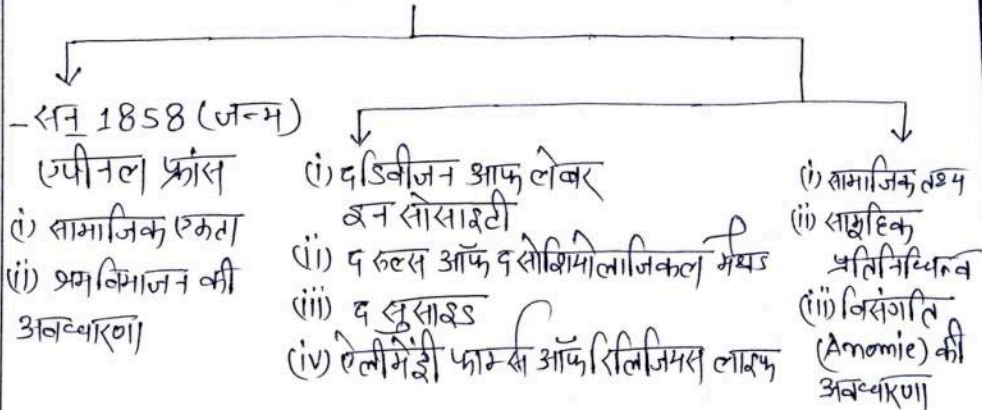
10705017

प्रश्न सं०-11

इमाइल डुर्कheim के समाजशास्त्रीय योगदान पर-चर्चा करें?

उत्तर- अग्रह कांमट के उत्तराधिकारी के रूप में इमाइल डुर्कheim का नाम सर्वाधिक लोकप्रिय है। समस्त सामाजिक व्यवस्थाओं का मूल कारक तो "समाज" स्वयं है। समाजशास्त्री का कार्य वास्तविक प्रयोगों द्वारा प्राप्त किए गए तथ्यों के आधार पर इसी मूल कारक "समाज" का विश्लेषण तथा व्याख्या करना है।

इमाइल डुर्कheim (Emile Durkheim)



प्रत्यक्षात्मक पहचान को विकसित करने का भेद्य इमाइल डुर्कheim को जाता है। डुर्कheim ने अपनी पुस्तक "द रूलस ऑफ द सोसियोलॉजिकल मीथड" में सामाजिक तथ्यों को वस्तु के समान अवलोकनीय माना है। समाजशास्त्र को सामूहिक प्रतिनिधियों का विज्ञान मानते हुए डुर्कheim ने इसे मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र और इतिहास से पृथक् करके स्वतंत्र विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित किया।

20/05/21

प्रश्न सं०-10

हरबर्ट स्पेंसर के "सामाजिक डार्विनवाद" की व्याख्या करें?

उत्तर- चार्ल्स डार्विन की कृति "Origin of Species" में व्यक्त विचार ही स्पेंसर के विचारों का आधार है।
चार्ल्स डार्विन के 2 प्रमुख विचार निम्नलिखित हैं-

- (i) उद्विकास पदार्थ का समन्वय तथा उसके सम्बन्धगति हैं जिसके दौरान पदार्थ एक अनिश्चित असम्बद्धता लिए समानता से निश्चित सम्बन्ध भिन्नता में बदलता है।
- (ii) चुनाव या प्रचरण के द्वारा समस्त अयोग्य प्राणि नष्ट हो जाते हैं और केवल सबसे योग्य प्राणि का ही अस्तित्व सम्भव होता है।

स्पेंसर ने डार्विन के सिद्धांतों को समाज के परिप्रेक्ष्य में लागू किया है। जैसे-2 समाज सरल से जटिल होता जा रहा है, तो सामाजिक व्यवस्था में पुरातन तकनीक / प्रौद्योगिकी का स्थान नवीन प्रौद्योगिकी ले रही है। मनुष्य सदा ही प्रगतिशील रहा है, नवान्चार के द्वारा तकनीक, शिक्षा, उत्पादन के तरीके सील रहा है। आधुनिक समाज, औद्योगिक समाज है जिसमें उत्पादन तरीके बदल रहे हैं, समय के साथ परिवर्तन हो रहा है तो मनुष्य भी नवीन तकनीक नवान्चार को अपना रहा है। समाज में मानव अस्तित्व प्रतियोगिता के आधार पर है, कुशलता ही जीवन का आधार है।

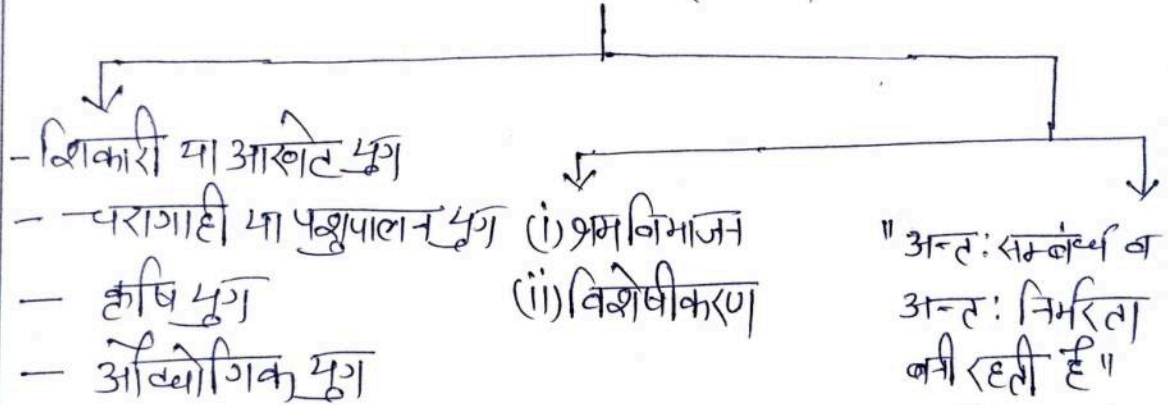
20705017

प्रश्न सं०-9

हरबर्ट स्पेंसर के "सामाजिक उद्विकास" सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर— स्पेंसर की सर्वाधिक ख्याति उनके द्वारा प्रतिपादित समाज की प्राणसावयवी अवधारणा के कारण है। स्पेंसर के अनुसार उद्विकास की प्रक्रिया या नियम समाज पर भी लागू होता है क्योंकि समाज भी एक अनिच्छित असम्बद्ध समानता से निश्चित सम्बद्ध भिन्नता में बदला है।

सामाजिक उद्विकास



स्पेंसर जीवित शरीर की जल समाज से तुलना करते हैं तो उनका उद्देश्य ऐसी एक व्यवस्था की ओर संकेत करना होता है जिसमें समाजवादी व्यवस्था की भाँति चेतन शक्ति केन्द्रित हो। इसके साथ ही समाज के प्रत्येक सदस्य के अंदर प्रत्येक चेतन शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार आपस में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं और यह निष्कर्ष निकालते हैं कि व्यक्ति का कल्याण राजकीय नियंत्रणों के अभाव में सम्भव है।

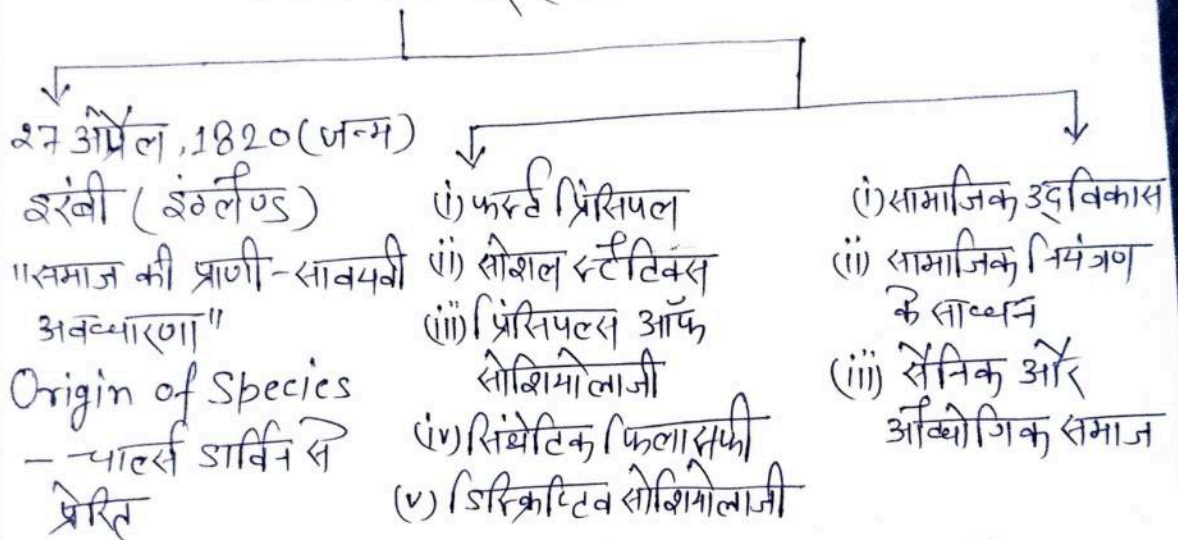
A070501T

प्रश्न सं०-8

हरबर्ट स्पेंसर के समाजशास्त्रीय योगदान की चर्चा करें?

उत्तर- ब्रिटिश समाजशास्त्रीय व दार्शनिक हरबर्ट स्पेंसर ने प्राणिशास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर समाज का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

हरबर्ट स्पेंसर (Herbert Spencer)



स्पेंसर का विचार जो प्राणिशास्त्रीय संरचना एवं सामाजिक संरचना के मध्य तुलनात्मक आधार प्रस्तुत करता है। सरल से जटिल, सामान्य से विशिष्ट तथा समानता से भिन्नता अलग-2 स्तरों पर स्पष्ट होती है, उसी प्रकार समाज में भी लागू होती है। स्पेंसर ने अपने तर्कों पर आधारित प्रस्तुत सिद्धांत की व्याख्या की जिसका प्रभाव उनके बाद के अनेक सामाजिक विचारकों के ऊपर पड़ा है। स्पेंसर के विचारों ने सामाजिक विचारधारा को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है।

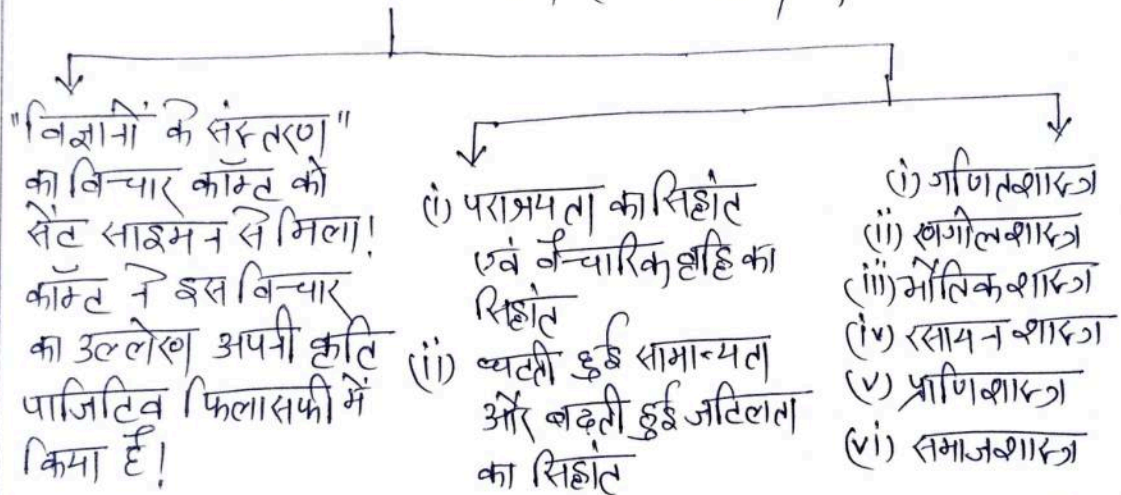
20705017

प्रश्न सं०-7

कॉम्ट के "विज्ञान के संस्तरण" का संक्षेप में बतलाइए?

उत्तर- प्रोफेसर बीगर्डस का कथन कि, "कॉम्ट की योजना का तीसरा चरण विज्ञानों का वर्गीकरण था, जिसके अन्तर्गत समाजशास्त्र को नवीनतम स्तर पर सर्वश्रेष्ठ विज्ञान के रूप में दर्शाया गया"।

विज्ञानों का संस्तरण (Hierarchy of Sciences)



विज्ञानों के विकास के इस क्रम में—चूंकि प्रत्येक विज्ञान की अध्ययन-विषयवस्तु क्रमशः जटिल होती जाती है, इस कारण प्रत्येक विज्ञान अपने से पूर्ववर्ती विज्ञान या विज्ञानों की खोजों, निष्कर्षों और सिद्धान्तों पर क्रमशः आधिक्य निर्भर होता जाता है। प्रत्येक विज्ञान अपने पिछले विज्ञान या विज्ञानों पर केवल निर्भर ही नहीं रहा है, बल्कि वह पिछले विज्ञान या विज्ञानों को अपनी खोजों से सींचता भी रहता है। इस प्रकार समाजशास्त्र की वैचारिकी में बहुत आयामों और दृष्टिकोणों का समन्वय है।

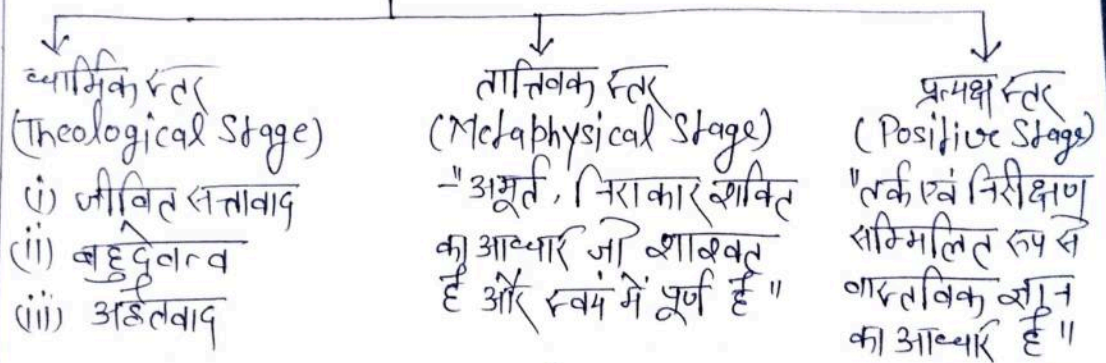
20705017

प्रश्न सं० - 6

कॉम्ट के "तीन स्तरों के नियम" कि विवेचना कीजिए?

उत्तर - सन् 1822 में जब कॉम्ट केवल 24 वर्ष के थे, तब ही आपने "तीन स्तरों का नियम" (Law of Three Stages) का प्रतिपादन किया था कि मानव के बौद्धिक विकास का अध्ययन करने पर यह स्पष्टतः पता चलता है कि इस क्रम विकास के तीन स्पष्ट स्तर रहे हैं।

"तीन स्तरों का नियम" (Law of Three Stages)



चिंतन की प्रकृति गतिमान है, मनुष्य अपने दृष्टिकोण को वैज्ञानिक बना रहा है। तार्किकता एवं बौद्धिक विकास अपनी जगह है, पर आस्था एवं विश्वास का अपना स्थान है। प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों ने सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रत्यक्षवादी योजना को कार्यान्वित किया है। सम्पूर्ण सामाजिक संगठन "भौतिक, बौद्धिक और नैतिक शक्तियों" का एक उत्तम सामंजस्य होता है। प्रत्यक्ष स्तर ही मानव सम्यता के विकास का एक उत्तम स्तर है।

10/10/2017

प्रश्न सं०-5

कॉम्टे द्वारा प्रतिपादित "प्रत्यक्षवाद के सिद्धांत" की विवेचना करें?

उत्तर- कॉम्टे के अनुसार प्रत्यक्षवाद का अर्थ "वैज्ञानिक" है। वैज्ञानिक विधियों में कल्पना का कोई स्थान नहीं है, ये तो निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की एक व्यवस्थित कार्य-प्रणाली होती है। इस प्रकार "निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण" पर आधारित वैज्ञानिक विधियों के द्वारा सब कुछ समझना और उससे ज्ञान प्राप्त करना ही प्रत्यक्षवाद है।

प्रत्यक्षवाद (Positivism)

- (i) कुछ निश्चित सामाजिक नियम
- (ii) यथार्थ ज्ञान
- (iii) वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- (iv) वैज्ञानिक कार्यप्रणाली
- (v) धर्म एवं विज्ञान का समन्वय
- (vi) सामाजिक पुनर्निर्माण का साधन

- (i) विज्ञानों का दर्शन
- (ii) वैज्ञानिक धर्म और नीतिशास्त्र
- (iii) प्रत्यक्ष राजनीति

"प्रेम इसका सिद्धांत है, सुव्यवस्था इसका आधार और प्रगति इसका लक्ष्य है।"

कॉम्टे लिखते हैं कि प्रत्यक्षवाद वह वैज्ञानिक मत है जिसका कि उद्देश्य समस्त मानव समाजों का, विशेषकर यूरोपिय समाजों या राष्ट्रों का भौतिक, बौद्धिक तथा नीतिक कल्याण करना है। कॉम्टे का प्रत्यक्षवाद धर्म और विज्ञान दोनों ही हैं और मानव-प्रगति के लिए उन्हें प्रथक करना उचित न होगा, बल्कि मानव प्रगति धर्म और विज्ञान के सामंजस्य से ही सम्भव होगी।

20/05/21

प्रश्न सं०-4

अगस्ट कांम्टे के समाजशास्त्रीय योगदान की-वर्त्ता करे?

उत्तर- अगस्ट कांम्टे का नाम "समाजशास्त्र के जनक" के रूप में सर्वत्र व्याप्त है। सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन कर सके - इस प्रकार के एक प्रथक सामाजिक विज्ञान की आवश्यकता आपने ही सर्वप्रथम अनुभव की और उस विज्ञान का नामकरण पहले "सामाजिक भौतिकशास्त्र" और बाद में समाजशास्त्र किया।

अगस्ट कांम्टे (Auguste Comte)

19 जनवरी 1798 (जन्म)

माष्टपेलियर (फ्रांस)

- सन् 1838 में
"सामाजिक भौतिकी"
का नाम बदल कर
"समाजशास्त्र" रखा।

(i) पॉजिटिव फिलॉसफी
(ii) पॉजिटिव पॉलिटी
(iii) कैंपिज्म ऑफ
पॉजिटिविज्म

(i) तीन स्तरों का नियम
(ii) प्रत्यक्षवाद
(iii) विज्ञानों का संस्तरण
(iv) मानवता का धर्म

अगस्ट कांम्टे ने व्योषणा की सामाजिक प्रगति या पुनर्गठन की सभी योजनाएँ कुछ ऐसे वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित होती-चाहिये जिनका आधार अनुभव और प्रयोग हो। सामाजिक सिद्धांतों के विवेचन में कांम्टे ने नए और मौलिक सामाजिक सिद्धांतों को विकसित करने की अपेक्षा अपने से पूर्ववर्ती विज्ञानों के विचारों का समन्वय व संगठन ही अधिक किया है, यही उनकी असाधारण योग्यता का परिचय है।

10705017

प्रश्न सं०-3

औद्योगिक क्रांति के प्रभाव की समीक्षा करें?

उत्तर- आधुनिक उद्योगों की नींव औद्योगिक क्रांति के द्वारा रखी गई, जिसकी शुरुआत ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई। इसके दो प्रमुख पहलू थे-

(i) विज्ञान एवं तकनीक का औद्योगिक उत्पादन में व्यवस्थित प्रयोग, विशेषकर नयी मशीनों का आविष्कार तथा ऊर्जा के नए साधनों का औद्योगिक कामों में उपयोग।

(ii) औद्योगिक क्रांति ने श्रम तथा बाजार को नए ढंग से बड़े पैमाने पर संगठित करने के तरीके विकसित किए।

औद्योगीकरण ने नगरीकरण में वृद्धि की तथा श्रमिकों का प्रवासन, रोजगार तथा श्रमिकों की समस्याएँ सामने आईं। आधुनिक शासन पद्धतियों के अनुसार राजस्व को स्वास्थ्य, सफाई व्यवस्था, आपराधिक गतिविधियों व व्यवसायों पर नियंत्रण तथा सर्वांगीण विकास जैसे-सार्वजनिक सार्वजनिक विषयों की जिम्मेदारी उठानी पड़ी। सामाजिक समस्याओं तथा उभरती माँग ने सामाजिक विज्ञान और विशेषकर समाजशास्त्र जैसी नयी विधाओं के अभ्युदय व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

10705017

प्रश्न सं०-2

फ्रांसीसी क्रांति का विश्व पर क्या प्रभाव पड़ा, वर्णन करें?
उत्तर- 14 जुलाई 1789 (बाइलील का पतन), फ्रांसीसी क्रांति ने व्यक्ति तथा राष्ट्र-राज्य के स्तर पर "राजनीतिक संप्रभुता" के आगमन की घोषणा की। मानवाधिकार के घोषणा-पत्र ने सभी नागरिकों की समानता पर बल दिया। -पुर्व के विशेषाधिकार समाप्त हुए। किसानों की, जो अधिकतर "सर्फ" (बैव्यर्क कृषिदास) थे, कृषीन वर्ग के जागीरदारों के-चंगुल से मुक्त करवाया गया।

गणतंत्र के स्वतंत्र नागरिक होने के नाते प्रभुत्वसंपन्न व्यक्ति हकों व अधिकारों के धारक बने तथा उन्हें कानून और राजकीय संस्थाओं के समक्ष समानता का अधिकार भी प्राप्त हुआ।

शिक्षा (विशेषकर स्कूली शिक्षा / विद्यालयी शिक्षा) को अब सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत लाया गया। साथ ही राष्ट्र - राज्य को भी नए सिरे से परिभाषित किया गया। अब इसे एक ऐसी प्रभुत्वसम्पन्न दस्ती माना गया जिसके पास एक केन्द्रीकृत शासन तंत्र है। फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धांत - "स्वतंत्रता, समानता एवं वैयुक्तिक" आधुनिक राज्य के नए उद्घोष बने।

20705017

प्रश्न सं०-1

ज्ञानोदय (Enlightenment) की ^{वया} सामाजिक उपलब्धियाँ रही हैं?
उत्तर- यूरोप के आधुनिक युग का प्रारम्भ पुनर्जागरण अथवा नवजागरण से माना जाता है। ज्ञानोदय को इसी का परिणाम माना जाता है। पुनर्जागरण की शुरुआत इटली में 14वीं शताब्दी में हुई थी। इस कालक्रम की गणना 1350 ई० से लेकर 1550 ई० तक अर्थात् लगभग दो सौ वर्ष निरंतर बना रहा। इसी युग को पुनर्जागरण का युग कहा जाता है। ज्ञानोदय का युग इसी का परिणाम माना जाता है।

ज्ञानोदय (Enlightenment)

- (i) प्रोटेस्टेंट विद्रोह
- (ii) वैज्ञानिक क्रांति
- (iii) बौद्धिक दृष्टान्तता

- (i) अभिव्यक्ति विचारों की स्वतंत्रता
- (ii) धर्मनिरपेक्षता
- (iii) विज्ञान एवं तर्क का महत्व
- (iv) सामाजिक प्रगति एवं व्यक्तिवादिता का महत्व

तार्किकता ने मानव समाज में प्रमुखता प्राप्त की। आधुनिक युग में मानव समाज द्वारा संभावना से वास्तविक मूल्यों में बदलने में उन वैचारिक प्रवृत्तियों का दाय है जिन्हें आज हम धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक चिन्तन व मानवतावादी विचार की संज्ञा देते हैं।